जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 7 ISSUE : 9 MUMBAI, MARCH 2017 PAGES : 40 PRICE : ₹25

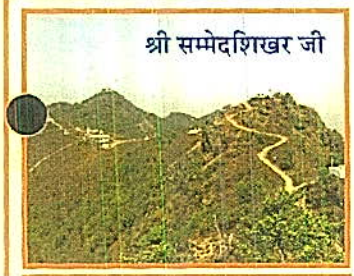

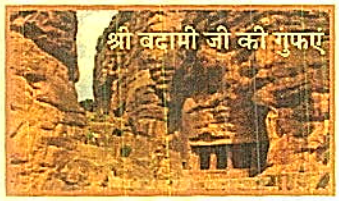

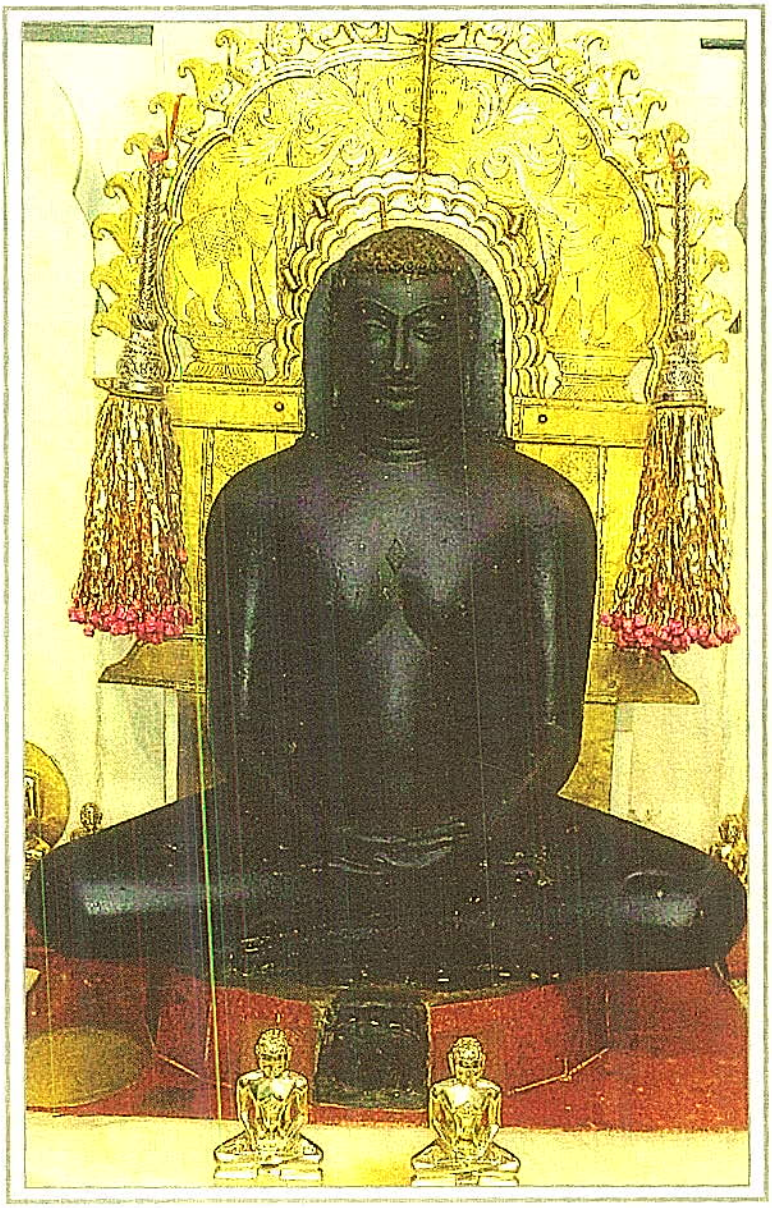

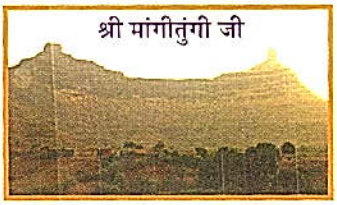

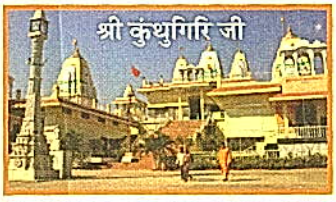

मूलनायक श्री 1008 विमलनाथ भगवान, अंबाजोगाई क्षेत्र - महाराष्ट्र

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

ऋषभदेव से महावीर जयंती तक हो जैन एकता का महोत्सव

जैन तीर्थवंदना का यह अंक जब आपके पास पहुँचेगा तब तक आदि ब्रह्मा, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जयंती चैत्र कृष्ण नवमी २१ मार्च २०१७ आ जायेगी और ९ अप्रेल को अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जयंती होगी।

भोगभूमि एवं कल्पवृक्ष की समाप्ति तथा कर्मभूमि के प्रारम्भ होने पर युग के आदि में प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेव द्वारा असि-मसि-कृषि, शिल्प, विद्या, वाणिज्य का ज्ञान देकर जीवन निर्वाह का मार्ग प्रशस्त किया। कर्मयुग की शुरूआत में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने भारत देश के नामकर्ता जिनके नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' है, ऐसे पुत्र भरत व महाबलशाली बाहुबली सहित ९९ पुत्र व दो पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को जन्म देकर उन्हें संस्कारित किया।

उल्लेखनीय है कि ऋषभदेवजी पुत्रियों के निवेदन पर शिक्षा को प्रोत्साहन देते हुए ब्राह्मी को दाहिने हाथ से अ, ई आदि स्वर व क, र, आदि व्यंजन योगवाह अक्षर लिखकर उसको अक्षर ज्ञान कराया तब से ही ऋषभदेवजी की पुत्री ब्राह्मी के नाम से आज हम उस लिपि को ब्राह्मी लिपि के नाम से जानते है। बाँये हाथ से सुन्दरी को १, २, ३ आदि अंक लिखकर इकाई, दहाई, सैकड़ा आदि की अंक पद्धति तथा सकलन-विकलन (जोड़ - घटाव), गुणा, भाग आदि अंक विद्या सिखलायी। यह भी तथ्य उल्लेखनीय है कि बाँये हाथ से सिखलाया तो अंकों का क्रम दायें से बायें की ओर लिखवाया तब से अंको का क्रम पीछे से ही चल रहा है।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने जगत में कर्मयुग की सृष्टि की रचना की थी, इसी कारण उन्हें आदि, ब्रह्मा, आदिनाथ, आदिश्वर आदि नामों से जाना जाता है। यह भी तथ्य है कि वे छह मास की कठोर साधना के बाद जब आहार के लिए निकले तो श्रावकों को आहारदान की अनभिज्ञता के कारण उनको छह माह तक आहार नहीं मिला। एक वर्ष पश्चात् हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस के यहाँ विधि पूर्वक आहार मिला वह दिन आज भी हम अक्षय तृतीया के रूप में मनाते हैं।

इसी प्रकार अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने छब्बीस सौ वर्ष पूर्व हमें अहिंसा का सन्देश दिया। विश्व का हर प्राणी मात्र जीवन को सुखपूर्वक जीना चाहता है। यह सुखपूर्वक जीने के लिए प्रत्येक प्राणी को मानव बनना होगा। मानव धर्म का प्रतिनिधित्व यदि कोई करता है तो वह अहिंसा परमो धर्म ही है। अहिंसा के सिद्धान्त की आवश्यकता आज सबसे ज्यादा प्रासंगिक हो गई है। आज हम विश्व के किसी भी धर्म

की बात करें, धर्मगुरुओं की बात करें तो सभी धर्म अहिंसा के पालन का सन्देश प्रदान करते हैं। ऐसा अनूठा धर्म है हमारा। जिसने 'जियो और जीने दो' का सन्देश देकर मनुष्य को जीने की राह दिखाई जिसे आठ दशक पूर्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सार्थक करके दिखालाया।

मैं इतना सब कुछ इसलिए कह रही हूँ कि आज हम जैनियों की स्थिति बड़ी विकट हो रही है। हम बहुत ही अल्प बचे हैं, उन अल्प में भी हमारा बहुत विघटन है, कई पंथ बने हुए हैं और निरंतर बनते चले जा रहे हैं। 'पंथ' के चक्कर में हम भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर के 'पथ' को भूलते जा रहे हैं।

आज आवश्यकता है हम एक जुट हो, एक जुटता से हम 'नयन पथ गामी भगवान महावीर' को स्मरण करें, और चिन्तन करें कि अहिंसा का पालन करने से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कितनी बड़ी शक्ति प्राप्त की और आज वे कहां पहुँच गए।

हम इन जयंतियों के माध्यम से उन महापुरुषों के जीवन की उपलब्धियों की चर्चा करें, उनका व्यक्तित्व-कृतित्व जन-जन तक पहुँचायें, सर्वप्रथम हमारे बच्चों को उनके गौरव गान से अवगत करायें, जिससे उन्हें ऋषभदेव से महावीर के कुल में जन्म लेने का गौरव अनुभवित हो सके।

साथ ही हमारे इतिहास से जो छेड़छाड़ हो जाती है, कभी भगवान महावीर को हमारा संस्थापक बना दिया जाता है। इस बात को जयंती के अवसर पर अवगत कराना जरूरी है कि हमारे प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, उनके पुत्र के नाम 'भरत' से ही हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा है। उन्होंने अंक लिपि, विद्या के साथ असि-मसि-कृषि, शिल्प, विद्या, वाणिज्य का उपदेश दिया। इस सब बातों की चर्चा के लिए आवश्यक है कि हम ऋषभदेव जयंती भी पूर्ण मनोयोग से मनायें।

ऋषभदेव से महावीर जयंती तक आयोजन हो कुछ नहीं तो मंदिर में भगवान की भक्ति सामूहिक रूप से हो ऐसी भावना है।

इन सबके साथ एकजुटता एक आवश्यक अंग है, समाज की एकता विखण्डित न हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति हमारे जिनायतनों, चलते फिरते तीर्थ, साधु परमेष्ठी की सुरक्षा में अपने आप को समर्पित करे।

दिगम्बर जैन जगत की एकता हर मोर्चे पर प्रदर्षित हो, जब भी जुलूस-शोभायात्रा निकले तो जैन-जगत का बच्चा-बच्चा उसमें सम्मिलित होकर सामूहिकता का परिचय दे। ऐसा संकल्प तीर्थंकरो की जन्म जयन्ती होना चाहिये।

अंत में कहना चाहूँगी कि इतिहास से अवगत कराने के लिए अपने बच्चों को तीर्थों की यात्रा अवश्य करायें, साथ ही उन्हें तीर्थों की महत्ता व इतिहास से भी अवगत करायें।

दिगम्बर जैन जगत की एकता का महापर्व गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी स्वामी का महामस्तकाभिषेक ७ फरवरी २०१८ से २५ फरवरी २०१८ तक आयोजित है। उक्त महोत्सव में दिगम्बर जैन समाज का हर परिवार सम्मिलित हो। जैन एकता का शंखनाद हो।

इसी भावना के साथ आइये। हम प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी तक के चरणों में अपने आप को समर्पित करें, उनसे प्रेरणा लेकर प्राणी मात्र के कल्याण के साथ स्वकल्याण का प्रयास करें।

सभी को जन्म जयंती की हार्दिक शुभकामना व बधाई के साथ

- सरिता एम.के. जैन

Sarita Jain

राष्ट्रीय अध्यक्ष

गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक एक स्वर्णिम अवसर

-डॉ.अनुपम जैन, इंदौर

5 मार्च 2017 को इन्दौर में श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) में 20-29 अक्टूबर 2017 को होने वाले राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के कार्यालय तथा 18 फरवरी 2018 से होने वाले भगवान गोम्मटेश्वर - बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के कलश आबंटन एवं प्रचार हेतु क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारम्भ हुआ। इन्दौर में ही इसी दिन दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी (2017- 2018) के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन होने के कारण स्वस्तिश्री पीठाधीश कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, माननीय श्री सुरेन्द्र हेगड़े (धर्मस्थल) श्री अशोक सेठी (बैंगलोर) तथा राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, म.प्र. आदि प्रान्तों के विभिन्न नगरों के सहस्राधिक समाज बन्धुओं की उपस्थिति से सभी आयोजन अत्यन्त प्रभावी एवं गरिमापूर्ण रहे।

पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने कहा कि यह ऐतिहासिक अवसर है। मैं स्वयं 1981,1994,2006 के महामस्तकाभिषेकों में सम्मिलित रहा हूँ। सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज भगवान बाहुबली, जो भगवान ऋषभदेव के पुत्र, प्रथम कामदेव एवं पुर्धरतपस्वी थे, के महामस्तकाभिषेक में उत्साह पूर्वक भाग लेता है। मैं समाज से अनुरोध करता हूँ एवं प्रेरणा देता हूँ कि श्रवणबेलगोल के महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम में उत्साह एवं सक्रियता पूर्वक सम्मिलित होवें तथा सभी कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक अपना योगदान देवें।

प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रदीप जैन (आगरा) (PNC) ने अपने प्रभावी वक्तव्य में कहा कि भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली का महामस्तकाभिषेक एक स्वर्णिम अवसर है। विश्व की यह अद्वितीय मूर्ति 1036 वर्षों से सतत् दिगम्बरत्व की प्रभावना कर रही है। अत: दिगम्बर जैन समाज के प्रत्येक परिवार को 2018 के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर वहाँ पहुँच कर अपनी भक्ति प्रदर्शित करनी चाहिये इससे पुण्य तो मिलेगा ही, पूज्य स्वामीजी द्वारा महोत्सव के अवसर पर 200 बेड का हॉस्पिटल बनाने की घोषणा को भी सम्बल मिलेगा। हमें अपने तीर्थों के चतुर्दिक रहने वाले नागरिकों के कल्याण के प्रति सदैव सचेष्ट रहना होगा जिससे क्षेत्र की जनता क्षेत्र के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति से जुड़कर उसके विकास में मानसिक रूप से जुड़ें। संख्या बल में कम होने पर समन्वय एवं सौहार्द्र के साथ रहने पर हम अधिक सुरभित एवं प्रभावी रहेंगे।

स्वयं मैंने 1981, 1994 एवं 2006 के महामस्तकाभिषेक के वर्षों के अतिरिक्त कई बार इस सर्वांग सुन्दर अद्वितीय प्रतिमा के दर्शन किये हैं। सम्पूर्ण विश्व में दिगम्बरत्व का गौरव बढ़ाने हेतु यह एक प्रतिमा अकेली ही सक्षम है। यह सर्वविदित है कि आज विश्व में जैन धर्म का प्रचार तो खूब हो रहा है किन्तु जैन धर्म की मूल दिगम्बर परम्परा अपने साहित्य/संस्कृति को सम्यक रूप से विश्व अकादमिक समुदाय तक नहीं पहुँचा पा रहा है।

वर्ष 2018 का महामस्तकाभिषेक हमें एक अवसर दे रहा है कि हम

1- ज्ञान की विविध शाखाओं के विकास में जैनाचार्यों के योगदान को रेखांकित करने वाला प्रामाणिक किन्तु सरल साहित्य हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार कर प्रकाशित करें।

2- बींसवी/इक्कीसवीं सदी में राष्ट्र निर्माण में महती भूमिका का निर्वाह करने वैज्ञानिकों/इंजीनियरों, प्रमुख उद्योगपतियों, खिलाड़ियों का जीवन वृत्त उपलब्धियों सहित संकलित कर प्रकाशित करें।

3- भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे अग्रणी भूमिका का निर्वाह करने वाले जैन भाई/बहनों का योगदान प्रमुखता से प्रचारित करें। पुस्तक प्रकाशन के अतिरिक्त हम डाकूमेन्ट्री आदि बनाकर T.V. चैनलों का भी सहयोग ले सकते हैं।

4- 2017 एवं 2018 में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में जैन समुदाय का पक्ष, जैन साहित्य एवं जैन संस्कृति को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करें प्रतिदिन अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में कही गई बात के दूरगामी एवं स्थायी प्रभाव होते हैं। हमें अपना पक्ष केवल अपने मंचों पर ही नहीं दूसरों के मंच पर भी रखना चाहिये। यदि हम इस दिशा में थोड़ा सा भी योगदान करेंगे तो यह हमारे परम पावन तीर्थ श्रवणबेलगोल के लिए हितकर होगा एवं हमें भी पुण्यलाभ होगा।

जो भाई-बहन अकादमिक क्षेत्र से नहीं जुड़े हैं या लिखने-पढ़ने का शौक नहीं रखते वे भी इस महोत्सव का प्रचार सोशल मीडिया पर कर सकते हैं इतना प्रचार करें कि हर भारतीय को लगने लगे कि यह तो हमारा ही कार्यक्रम है।

सभी से तीर्थ भक्ति का परिचय देने के अनुरोध सहित।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 9 मार्च 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

इस अंक में

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका	7
जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता	9
आज भी सार्थक हैं भगवान महावीर के सिद्धांत	12
श्री महावीर की देशना	14
आदि ब्रम्हा युग सृष्टा मगवान ऋषभदेव एवं उनकी क्रान्तिकारी शिक्षायें	15
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की सभा ..	17
संवत् 1561 में भट्टारक ज्ञानभूषणजी द्वारा प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर ...	21
दिगंबर जैन तीर्थ चंवलेश्वर	22
अंबाजोगाई–ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	27
ब्रह्म जिनदास विरचित भद्रबाहु रास	29
ललितपुर के प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र	32
Heritage buffs take Ahimsa Walk at Egmoiv museum	35

गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक की तिथियाँ

तं गोम्मटेशं पणमामि णिच्चं

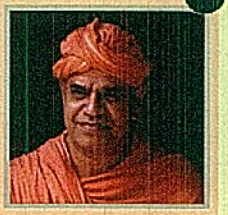

बाहुबली महामस्तकाभिषेक का उद्घाटन
: 7 फरवरी, 2018

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और अन्य कार्यक्रम
: 8 फरवरी, 2018 से 16 फरवरी, 2018

महामस्तकाभिषेक शुभारंभ
:17 फरवरी, 2018

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि वैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा वैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

विगत अंकों में हमने निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कृत ६ निबन्धों को प्रकाशित किया। इस अंक में हम सांत्वना पुरस्कार प्राप्त दो निबन्ध प्रकाशित कर रहे हैं। यदि आपके मन में भी कुछ नवीन विचार आ रहे हों तो आप प्रकाशन हेतु हमें इन्दौर के पते पर भेज सकते हैं।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान-सम्पादक

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका

- अपूर्व बड़जात्या, इंदौर

बूंद-बूंद मिलकर ही सागर बन पाता है ऐ भाई
सूत-सूत से मिलकर चादर बनती सबको सुखदाई
हे समाज के लिये युवाओं में जागृति की आवश्यकता
टिका हुआ जिनके पैरों पर तीर्थ-संरक्षण का तरन्ता।

अनादि काल से विद्यमान इस विश्व में जैन धर्म और जैन तीर्थ भी अनादि काल से विद्यमान हैं हमारे प्रमुख तीर्थ क्षेत्रों में पर्वतराज श्री सम्मेदशिखरजी को शाश्वत निर्वाण भूमि मानकर यहां की यात्रा करना महत्वपूर्ण माना गया है, उसी प्रकार तीर्थकरों की शाश्वत जन्मभूमि के रूप में अयोध्या की महत्ता आगम में बताई गई है। भारत का कोई भी प्रांत ऐसा नहीं है जहां पर जैन-धर्म का अस्तित्व नहीं रहा हो। उत्सव प्रिय: मनुष्या सूक्ति के अनुसार मनुष्य मन उत्सव प्रिय है विभिन्न उत्सवों के साथ-साथ प्राय: सभी परिवार जन अपने ज्ञानवर्धन एवं मनोरंजन के लिये देशाटन और तीर्थ यात्रायें करते हैं। जैन धर्म और संस्कृति में तीर्थयात्रा करना दोनों ही पुण्य का कार्य माना जाता है, इसीलिये धार्मिक जन समय-समय पर तीर्थों की वंदना करते ही है। भगवान आदिनाथ की निर्वाण भूमि अष्टापद, भगवान वासुपूज्य की निर्वाण भूमि चंपापुरी, भगवान पार्श्वनाथजी सहित बीस तीर्थकरों की निर्वाण भूमि सम्मेदशिखर, भगवान नेमिनाथजी की गिरनार तथा भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी जैन तीर्थों में प्रमुख तीर्थ माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त अयोध्या, हस्तिनापुर, बनारस आदि तीर्थकरों के कल्याणक भूमि के रुप में तथा श्रवणबेलगोला, महावीरजी आदि अतिशय क्षेत्रों के रुप में जैन धर्म के अनुयायियों की आस्था के केन्द्र हैं। हमारे तीर्थ हमारे समाज की संपदा है जिसका संरक्षण करने का दायित्व यदि युवा वर्ग अपने हाथों में लेवे तो उनकी ऊर्जा, आधुनिक टेक्नीक का ज्ञान, तीर्थ क्षेत्रों के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका

नवजवानों तीर्थों की तकदीर बना दो
तीर्थों के संरक्षण में अपना ध्यान लगा दो

जो युवा वर्ग सुभाषबोस के आव्हान पर अपने प्राण न्यौछावर करने को कतार में खड़े हो गये थे, जो युवा अंग्रेजों की दासता के समय महात्मा गांधीजी के नारे को सुनकर अपने घरों से बाहर निकलकर आंदोलन से जुड़ गये थे। लाल बहादुर शास्त्रीजी के आव्हान पर पूरे देश के युवाओं ने एक वक्त के भोजन का त्याग कर दिया था। अण्णा हजारे के निवेदन पर पूरे देश का युवा भ्रष्टाचार मुक्त आंदोलन से जुड़ गया तो यदि समाज का नेतृत्व आव्हान करे तो युवा धर्म व तीर्थ से भी जुड़ेगा।

युवा देश व समाज का भविष्य है, उसी के कंधे पर जब तीर्थ रक्षा का भार सौंप दिया जाये अथवा जब वह अपनी इच्छा से तीर्थ संरक्षण व प्रगति में अपनी रुचि दिखाये तो तीर्थों का जो स्वरूप निखरेगा वह अद्वितीय होगा। इस हेतु सर्वप्रथम समाज के नेतृत्व को उस पर विश्वास करना होगा तत्पश्चात् अपने मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से युवाओं को तीर्थों से जोड़ना होगा उन्हें इतनी स्वतंत्रता दी जाये कि वे तीर्थ हित में स्वत: निर्णय ले सकें, परंतु उनके निर्णयों पर नेतृत्व विशेषकर अनुभवी नेतृत्व की नजरें अवश्य होनी चाहिए ताकि स्वतंत्रता स्वच्छन्दता नहीं बन जाये।

तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवा वर्ग अपनी सहभागिता निम्न प्रकार से दे सकते हैं:-

1. जैन धर्म के प्रति आस्थावान बने:- सबसे पहले यह आवश्यक है कि हम युवाओं में धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करे यदि ऐसा होता है तो उनके कदम स्वयमेव ही हॉटेल, क्लब, सिनेमा हॉल की तरफ ना बढ़कर तीर्थों की ओर बढ़ेगें, जिन मंदिरों की ओर बढ़ेगें और जब वे तीर्थों पर जाकर उसकी महत्ता को जान जायेंगे तो उनके धन का उपयोग वे तीर्थ की अन्य व्यवस्थाओं में भी कर सकेंगे।

2. युवा वर्ग अपना संगठन बनाये:- वर्तमान समय में जब हम जैन समाज के परिदृश्य पर नजर डालते हैं तो एक प्रसन्नता की लहर व्याप्त होती है यह देखकर कि आज युवाओं की रुचि धर्म के कार्यो एवं तीर्थ-यात्राओं की और बढ़ रही है, आज भारत के हर उस शहर में जहां जैन समाज के 20-25 घर या परिवार भी क्यों ना हो उनका संगठन है जिसके माध्यम से वे सामाजिक गतिविधियां करते हैं। ये संगठन वर्ष में एक या दो बार ग्रुप के साथ तीर्थ-क्षेत्रों की वंदना को जाते हैं और वहां पर आवश्यक संसाधन जुटाकर अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। यह तीर्थ क्षेत्र संरक्षण और विकास की दृष्टि से प्रगतिशील कदम है। अपने संगठन के माध्यम से युवा वर्ग वातानुकूलित कमरे निर्माण, ठण्डे जल की प्याऊ निर्माण, टूटे-फूटे दरवाजों आदि की मरम्मत

करने, यात्रियों के लिये आरामदेह गादी-बिस्तरों की व्यवस्था करके अपनी सहभागिता दे सकते हैं।

3. तीर्थ रूपी विरासत को संभाले:- युवावर्ग को यह जानना होगा कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में सभी संप्रदायों के अनेकों तीर्थ-क्षेत्र हैं हिन्दुओं के लिये केदारनाथ, तिरुपतिबालाजी, बद्रीविशाल, हरिद्वार आदि श्रद्धा के तीर्थ हैं तो मुसलमानों के लिये मक्का-मदीना, सिक्खों के लिये अमृतसर के स्वर्णमंदिर आस्था का केन्द्र है तो बौद्धो के लिये गयाजी तीर्थ क्षेत्र महत्वपूर्ण है। परंतु समस्त धर्मों में मात्र जैन धर्म ही एक मात्र ऐसा धर्म है जिनके एक नहीं दो नहीं 24 तीर्थकरों ने भारत की पावन धरती पर जन्म लेकर धर्म की गंगा बहाई और जीवन के अंत में मोक्ष प्राप्त किया। उनसे संबंधित समस्त तीर्थ आज अपने भव्यतम रूप में जिन-धर्म के सत्य-अहिंसा का ध्वज फहराते हुए संपूर्ण विश्व को आकर्षित कर रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने अपनी धार्मिक आस्था को बलवती किया और अपने धन का सदुपयोग करके जिन-तीर्थ क्षेत्र रुपी अनमोल संपदा जो हमें दी है उसकी रक्षा करना तथा उन संपदा में वृद्धि करने का दायित्व युवाओं को लेना होगा ताकि कोई अन्य धर्मावलम्बी हमें कमजोर समझकर उस विरासत को हड़प ना ले।

4. जीर्णोद्धार में सहभागी बने:- युवा वर्ग को चाहिये कि वे उन तीर्थों पर ध्यान दें जिनके हालात खस्ता हो रहे हैं दीवारों में दरारें आ रही हैं, जहाँ का फर्श खिसक रहा है, जहाँ रंग-रोगन के अभाव से उस तीर्थ का सौंदर्य कम हो गया है, जहाँ की मूतियाँ खण्डित हो रही हैं। इन सबकी ओर युवा वर्ग अपना ध्यान लगाये और समाज तथा सरकार के सहयोग से जीर्णोद्धार एवं पुनर्निर्माण के द्वारा तीर्थ को सौंदर्य प्रदान करें।

5. युवा शक्ति का सदुपयोग करें:- युवा वर्ग में शक्ति है- जोश है।आज हमारे जैन युवाओं की शक्ति को राजनैतिक दल विपरीत दिशा में मोड़ रहे हैं,यदि युवाओं की शक्ति को तीर्थों के विकास के उद्देश्य से जोड़ दिया जाये, उन्हें बताया जाये कि किस तरह पुरातन काल में हमारी जैन मूर्तियों एवं शास्त्रों को खण्डहरों में दबा दिया गया, नदियों में फेंका गया और कुछ विदेशी लोग अपने साथ ले गये। तो उनकी धार्मिक भावना जागृत होगी और वे तीर्थ संरक्षण हेतु आधुनिकतम प्रयास करके उन्हें सुरक्षित कर सकेंगे, इसके लिए समस्त तीर्थों पर सी.सी.टी.वी. कैमरे लगवाये जायें, समस्त तीर्थों की एक सूची बनाई जाये और उन तीर्थों को तीर्थ क्षेत्र कमेटी से जोड़ा जाये। जिस तरह श्वेताम्बर समाज में तीर्थों का विकास एक क्रमबद्ध, योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है। जिसमें समस्त आधुनिकतम साधन सुविधाओं की उपलब्धि कराई जाये, जिसकी संपूर्ण आय-व्यय का हिसाब एक केन्द्र पर दिया जाये और उस क्षेत्र की गतिविधियाँ भी उस केन्द्र की नजर में हो तो उस तीर्थ पर मर्यादाओं का पालन निरन्तर होता रहेगा और एक सुस्पष्ट योजना नीति के तहत तीर्थों का विकास करके संरक्षण संबंधी साधन सुलभ करवाये जा सकेंगे।

6. प्रतिभा का उपयोग हो:- युवा वर्ग अपनी प्रतिभा का उपयोग तीर्थ क्षेत्र हेतु भी करें। जैन समाज एक शिक्षित व सभ्य समाज है आज हमारे समाज का युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी भारत का, जैनत्व का नाम गौरवान्वित कर रहा है। यदि समाज का युवा वर्ग संकल्पित हो जाये तो वह अपनी इंजीनियरिंग दक्षता का, आर्किट्रेक्चर प्रशिक्षण, इंटीरियर के ज्ञान का, पुरातत्वीय ज्ञान का, मैनेजमेंट क्षमता का, वास्तु विशेषज्ञता का उपयोग तीर्थक्षेत्र के नव-निर्माण, उसके सौंदर्यीकरण, आवास, प्रसाधन संबंधी कार्यों में करके समाज को एक सुन्दर उपहार दे सकते हैं।

7. जो युवा धर्म का ज्ञान रखते है तथा जिनकी धार्मिक ज्ञान देने में रुचि है, जो चिकित्सक हैं वे एक माह में एक या दो दिन अथवा सप्ताह में एक दिन तय करके उस क्षेत्र पर शैक्षणिक व चिकित्सकीय सुविधाओं का विस्तार कर सकते हैं।

8. हमारे समाज के युवा जो आज विदेशों में उच्च पदों पर आसीन होकर एक आदर सूचक धनराशि प्रतिमाह प्राप्त करते हैं उनका रुझान यदि हमारे तीर्थों की ओर हो जाता है तो फिर तीर्थों पर सौदर्यीकरण करने यातायात के साधनों में वृद्धि करने आधुनिकतम पर्वतीय सुविधाओं का विस्तार करवाने में अपना सहयोग दे सकता है जिसके लिये उसे शासन का सहयोग लेना हो

9. यदि युवा जागरुक है, निडर है, राजनीति में रुचि रखता है तो वह चुनाव लड़े, मंत्रि-मण्डल का हिस्सा बने। और सरकारी नीतियों का, नियमों का ज्ञान होने से उनसे मिलने वाले लाभों का उपयोग करके तीर्थों का संरक्षण एवं विकास कर सकता है।

10. आज हमारे कई तीर्थ आधिपत्य की लड़ाई लड़ रहे हैं जो युवा वकील है उनके द्वारा इस समस्या का समाधान कानूनी ढंग से किया जा सकता है। आज हमारे प्रमुख तीर्थ सम्मेदशिखर जी, गिरनारजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ आदि तीर्थों पर आये दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं, हमारे ही तीर्थ हमारे हाथ से निकलते जा रहे है, यद्यपि यह हमारी उपेक्षा का परिणाम है, परंतु जो हो गया उसे कैसे सुलझाया जाये तथा जो अनहोनी हो सकती है, उससे कैसे बचा जाय यह हमें आज का युवा ही अच्छी तरह से समझा सकता है।

यह समाज के लिये प्रसन्नता व गौरव की बात है कि आज हमारे दिगंबर संतों के आव्हान पर, प्रेरणा से युवाओं में उत्साह आया है और वे तीर्थों से भी जुड़ रहे हैं।

इस तरह और भी कई तरीके है जिनमें समय, श्रम व शक्ति के साथ तन, मन,धन का समर्पण प्रभावकारी होगा। अत: यदि हमें तीर्थों के संरक्षण और विकास को गंभीरता से लेना है तो युवाओं के हाथ में कमान सौंपने का हौसला दिखाना होगा। यदि हमने उनके क्रिया-कलापों पर ज्यादा रोक-टोक नहीं लगाई, हस्तक्षेप नहीं किया तो आने वाले 25 वर्षों में हमारा समाज तीर्थों की दृष्टि से संपन्न समाज होगा। पूर्णत: विकसित, पर्यावरण की दृष्टि से उत्तम, भव्य कलाकारियों से जन-जन के मन को मोहने वाला सुंदरतम व्यवस्थाओं से परिपूर्ण तीर्थ का स्वप्न युवाओं की सहभागिता से ही साकार किया जा सकेगा। युवाओं को आव्हान करते हुए यही कहना चाहते हैं कि:-

"प्राचीन तीर्थ पुकार रहे हैं, आओ युवा देखो-भालो,
जीर्ण-शीर्ण हम हो रहे हैं, अंतिम सांसों के पूर्व संभालो,
नवीन तीर्थ का आमंत्रण है, युवा तुम्हें आगे आना,
तीर्थक्षेत्र संरक्षण और विकास में जमकर जुट जाना।"

★★★★

जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता

- श्रीमती नीला जोहरापुरकर

तीर्थ, संस्कृति के प्राण है, तीर्थ, धर्म के प्राण है।
तीर्थों की प्रगति, भटकती हुई मानवता के लिये
सूर्य का प्रमाण है, सूर्य के समान है।

दिगंबर जैन धर्म प्राचीन है, तीर्थकर भगवान की परम्परा अनादि काल से प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक चली है, इसके पश्चात् तीर्थस्वरूप संत, आचार्य, मुनि आर्यिका होते रहे, इन परम वंदनीय तीर्थंकरों के प्रति आस्था व श्रद्धा के कारण हमारे पूर्वजों ने, जैन धर्मावलंबियों ने प्रारम्भ से ही जैनायतनों का निर्माण किया है। जिनबिम्ब की पूजा, अर्चना उनका पुनीत कर्तव्य रहा है और वर्तमान में भी है, इसलिये मंदिरों और मूर्तियों के निर्माण में वे सदैव अग्रणी रहे, जिन-जिन क्षेत्रों पर तीर्थकरों और मुनियों के गर्भ, जन्म,तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याणक हुऐ वे सभी क्षेत्र तीर्थ बन गये, पूजनीय हो गये। संपूर्ण भारत में प्राचीन जिन मंदिर और मुर्तियाँ आज पुरातत्व की संपदा हैं।

श्रमण संस्कृति व तीर्थ संस्कृति:-

श्रमणों की जो संस्कृति है वह श्रमण संस्कृति कहलाती है
आदि प्रभु से महावीर तक, आज तलक बढ़ती जाती है।
उसी संस्कृति के संरक्षण का, आज श्रेष्ठ पुरुषार्थ करो।
दान करो या करो यात्रा, तीर्थो का उद्धार करो।।

ये दोनों संस्कृति जैन धर्म रुपी रथ के दो पहिये है, इसमें से एक भी पहिया यदि कमजोर है तो रथ आगे बढ़ नही सकता, वह कभी भी क्षतिग्रस्त हो सकता है इसलिये **श्रावक जो रथचालक की भूमिका निभाता है उसका कर्तव्य है कि दोनों पहिये व्यवस्थित रखे, सुरक्षित रखे, जिससे श्रमणों का, जैन धर्म का और तीर्थों का विकास होता रहे। साधु सम्प्रदाय, समाज व धर्म की रीढ़ है।**

तीर्थकर श्री आदिनाथ भगवान से ही श्रमण संस्कृति के साथ-साथ तीर्थ संस्कृति का प्रर्वतन हुआ जो आज तक चल रहा है। हमारी जैन परम्परा का सांस्कृतिक इतिहास प्राचीन धरोहर के रूप में जिनवाणी जिनायतन व तीर्थों में सुरक्षित है। तीर्थ इतने महत्वपूर्ण है कि इसके बिना धर्म, समाज, श्रावक,श्रमण व आराध्यों की संकल्पना के लिये कोई धरातल नहीं मिलता। **तीर्थों के अभाव या असुरक्षा में न तो किसी समाज का भूत स्पष्ट होता है न ही उसे वर्तमान के लिये कोई धरातल मिलता है फिर भविष्य तो उसका अंधकारमय ही है अत: किसी भी उपायों से तीर्थों की प्रगति का उद्यम होना ही चाहिये।**

तीर्थों की प्रगति:-

साधारणतया हम जिस आराधना स्थल की यात्रा करते है उस स्थान को तीर्थ कहते हैं। तीर्थ भवसागर से पार उतारने का मार्ग स्थान है। सदियों से दिगम्बर जैनियों में तीर्थयात्रा के लिये चर्तुविध संघ, हजारों हजार दिगम्बर जैन श्रद्धालु और यात्री संघ महापवित्र तीर्थों की वंदना करते रहे हैं और साधर्मी भाई बहनों को कराते रहे हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व जब आवागमन के साधन और सुविधाए कम थी तब भी श्रावक जन बहुत श्रद्धा व भक्तिभाव से अपना इहलौकिक और पारलौकिक जीवन मंगलमय बनाने के लिये, कष्ट सहते हुए असुविधाओं को दुर्लक्षित करते हुये आनंदपूर्वक यात्रा करते थे। लेकिन अब विचारों की दिशा में परिवर्तन आ गया है। वर्तमान में तीर्थों की प्रगति किस रुप में अपेक्षित है इसपर थोड़ा विचार मंथन आवश्यक है।

तीर्थक्षेत्र पवित्रता और आत्म शांति के धाम माने जाते है। **इसलिये वही तीर्थ प्रगत माने जायेंगे जहाँ पर सभी दिगम्बर जैन वच्चों से लेकर वयस्क और वृद्ध, निम्न, मध्यम और उच्च धनाढ्य सभी वर्ग के लोग, एक समान सुविधा के हकदार हो, एवं सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर, कषायों का शमन कर, अपनी-अपनी पद्धति के अनुसार शांति के साथ पूजा कर सके। जैन धर्म में पूजा का महत्व आत्मकल्याण के साथ जुड़ा है न कि पद्धति के साथ, पद्धति को इतनी प्रमुखता नहीं दी गई है इसलिये इस पर जादा शोरगुल न मचाकर आत्म साधना पर ध्यान केंद्रित किया जाय तो पूजा पद्धति की समस्या आड़े नहीं आयेगी समस्याओं का दूर होना तीर्थों के प्रगति का कारण है।**

वर्तमान में हमारी नवीन पीढ़ी पैसे को ज्यादा महत्व न देकर सभी विशिष्ट सुविधाओं से संपन्न उदा: मार्ग व्यवस्था, स्वच्छ आवास, सुस्वादु भोजन, स्वच्छता और टीपटाप चाहती है और इन्ही तीर्थों की वंदना कर अपना अहोभाग्य मानती है अत: ये सब व्यवस्था तीर्थों की प्रगति के कारण है।

महिलाओं की तीर्थ प्रगति में सहभागिता :

महिलाओं में बहुत शक्ति व सहनशीलता होती है, केवल उसके सदुपयोग की आवश्यकता है। महिलाओं की शक्ति 50% है इसे केवल घर संसार और बच्चो में उलझकर समाप्त नही होनी चाहिये।

आज समय की पुकार है नारी को आगे होकर नेतृत्व की डोर संभालनी होगी। महिलाओं को चाहिये कि नये मंदिर के निर्माण के साथ-साथ पुराने तीर्थों पर भी साधुओं की आहार व्यवस्था व सुरक्षा की जिम्मेदारी स्वयं ले और तीर्थों की पतनोन्मुख व्यवस्था पर प्राथमिकता से ध्यान दे क्योंकि तीर्थ और दिगम्बर मुद्रा से ही संस्कृति आगे चलेगी।

समाज को चाहिये कि वो महिलाओं को आगे बढने के लिये प्रोत्साहित करे क्योंकि महिलाओं की समस्या केवल महिलाओं की ही नही संपूर्ण समाज की है। ऐसी सोच रखने वाले स्त्रीवादी पुरुषो की आज बहुत जरुरत है। पुरुषों ने स्त्रियों के कौन-कौन से प्रश्न है उसे कैसे हल किया जाये,

और कैसे योगदान दिया जाय जिससे वो सिर्फ धर्म के क्रियाकांड में न उलझकर या क्रियाकांड को ही धर्म समझकर उसी में न उलझ जाये जैन धर्म में ऐसे कितने कार्य हैं जो महिलाए बखूबी से कर सकती हैं महिलाओं के सिवाय कोई भी धार्मिक क्रिया अधूरी है। तीर्थ जीर्णोद्धार भी एक धर्म की क्रिया है, पुण्य की क्रिया है। इसलिये इसमें महिलाओं का साथ रहेगा तभी तीर्थ विकसित होगे।

उदाहरण के तौर पर माननीय सरितादीदी के मार्गदर्शन से तमिलनाडू के तीर्थों का कायाकल्प हुआ

महिलाओं की तीर्थ प्रगति में व्यावहारिक सुझाव:-

1) सर्वप्रथम सभी महिलाओं को तीर्थ प्रगति का सहभाग घर से ही प्रारंभ करना पड़ेगा। परिवार के सदस्यो से सहृदयता पूर्वक चर्चा कर नये तीर्थों के निर्माण के साथ-साथ प्राचीन तीर्थों का विकास कितना आवश्यक है ये उन्हे पटा (समझा) देना पड़ेगा, जिससे वे कुछ दान राशी तीर्थों के विकास में भी लगाए।

2) परिवार के सभी सदस्यों के मन में तीर्थों के प्रति श्रद्धा और अपनत्व की भावना जागृत करे और उन्हें प्रेरित करे कि हम सब आसक्तिपूर्वक भ्रमण और मनोरंजन हेतु पर्यटन स्थलों पर न जाकर, भक्तिपूर्वक वंदन और आत्मरंजन हेतु तीर्थस्थलों पर जायेंगे। जिससे तीर्थो पर चहल-पहल बढ़ेगी विकास भी होगा।

3) सामान्यत: अधिकांश महिलाओं को पुरातत्व और इतिहास की ओर विशेष रुचि नही होती। लेकिन हम सभी महिलाओं को स्वयं रुचि बढाकर, महिला मंडल, स्वाध्याय मंडल और किटी पार्टी में प्राचीन तीर्थों की महत्ता, एक-एक तीर्थों की जानकारी, देवी देवताओं की मूर्तियाँ तथा शिलालेख जो पुरातत्व की संस्कृति के अभिन्न अंग है उनकी भी चर्चा होनी चाहिये।

स्वाध्याय मंडल में यदि पंथों की, संतो की चर्चा न कर, तीर्थों की प्रगति की चर्चा होगी तो कषाय कम होकर ज्ञान अभिवृद्धि के साथ-साथ तीर्थों के विकास का विजारोपन भी होगा।

4) अधिकांश महिलाऐ किसी सोशल ग्रुप, महिलामंडल या किटी पार्टी से या किसी साधु संस्था से अवश्य जुड़ी हुई है बिना महिलाओं के चाहे, धार्मिक हो या सामाजिक आयोजन सफल नहीं हो सकते। महिलाएँ अपनी शक्ति का योग्य उपयोग कर समाज को नई दिशा दे सकती हैं। चातुर्मास खत्म हो जाने के बाद हर शहर, हर नगर में पंचकल्याणकों की बहार आ जाती है। पंचकल्याणकों का विरोध नहीं है लेकिन इतना तो होना ही चाहिये, क्या हम पुराने जीर्ण-शीर्ण मंदिर जहाँ उन्हें कोई संभाल नहीं रहा है उन मूर्तिओं को नये मंदिरों में स्थापित नहीं कर सकते? पंचकल्याणक में महिलाओं की विशेष भूमिका होती है कुछ नियम यदि महिलाएँ बना ले तो करोड़ों रुपये की बचत होकर उसका सदुपयोग तीर्थों के विकास में हो सकता है।

1) हम पंचकल्याणक में फ्री साडीयाँ नहीं लेगें।

2) जहाँ भोजन की कूपन राशि गयी है वहाँ ही भोजन करेंगें।

3) सीमित प्रकार के भोजन होगे तब ही भोजन करेंगे क्या हम तीनों व्यवस्था में नहीं बना सकते? समाज का करोड़ो रुपयों इसमें खर्च हो जाता है करोड़ो रुपयो का सदुपयोग हम तीर्थों पर मैरिज हॉल, हॉस्पीटल उच्च तकनीकी विद्यालय (छात्रावास सहित) हो जिससे हमारे युवा वर्गो को रोजगार का साधन प्राप्त हो और तीर्थ भी विकसित हो।

5) महिलामंडल द्वारा, नजदीकी तीर्थपर महिलाओं के लिये योग शिविर लगाकर, योग और समतोल व्यायाम, महिलाओं के लिये कितना आवश्यक है, इसका महत्व समझाकर, स्वस्थ तन और मन से हम तीर्थों की सेवा कर सकते हैं।

6) रक्षाबंधन पर्व **तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस** के रूप में प्रा तीर्थों पर मनाया जाना चाहिये, महिला वहाँ सहपरिवार भाइयों और बहनों के साथ रक्षा सूत्र बांधकर रक्षाबंधन पर्व अनोखे तरीके से मनाकर, तीर्थ की रक्षा का संकल्प लेकर तीर्थों के विकास में सहयोगी बन सकती है।

7) अक्षय तृतीया, श्रुतपंचमी इन पर्वो पर ग्रीष्मकालीन छुट्टियाँ रहती है तब तीर्थों पर बच्चों के लिये शिविर लगाकर उन्हें तीर्थों के महत्व उनकी उपयोगिता, उनका विकास कैसे हो इसकी जानकारी देकर बचपन से ही तीर्थो के प्रति आत्मीयता का दीप प्रज्वलित कर सकते है। इसके साथ ही धार्मिक ज्ञान, हस्तकला, कथाकथन, स्मरण शक्ति के खेल व्यक्तित्व विकास और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सिखाये जाये। जिससे हमारे बच्चे सर्वगुणसंपन्न और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होकर तीर्थों के विकास में भागीदार बने।

8) तीर्थों पर वृक्षारोपण सरीखे पर्यावरण को सहाय्य करने वाले उपक्रम भी महिलाऐं कर सकती हैं।

9) महिलाओं को भी तीर्थ संरक्षण का प्रशिक्षण देना आवश्यक है क्योंकि तीर्थ संरक्षण भी तीर्थो के विकास में एक महत्वपूर्ण कारण है इसलिये शहरों में तीर्थ संरक्षण शिविर लगाये जाना चाहिये जिससे समाज में तीर्थ प्रगति की लहर जागृत हो।

10) महिला मंडल की ओर से अल्प खर्च में वधू-वर मेला, युवा परिचय सम्मेलन का आयोजन जरुर होना चाहिये जिससे युवा वर्ग तीर्थों पर आये तीर्थों के प्रति उनकी आस्था बढें और विकास में भी योगदान मिले।

11) महिलाए तीर्थों पर शुद्ध व सात्विक खाद्य सामग्री तैयार करने के लिये गृह उद्योग जैसी योजनाए चला सकती हैं जिससे गरजू जैन महिलाओं को रोजगार भी मिलेगा और तीर्थों पर शुद्ध भोजन उपलब्ध होने से यात्रियों के आवागमन में वृद्धि, तीर्थों के विकास वृद्धि में सहायक होगी।

12) चातुर्मास काल में, संतों के समक्ष पुरातत्व शिविर लगाकर प्रोजेक्टर के माध्यम से उपेक्षित तीर्थो की जानकारी समाज के सभी वर्गो के सम्मुख रखेंगे तो तीर्थों के विकास में सभी का योगदान हमें मिलेगा।

13) आज तीर्थों पर पूजा करने के लिये पुजारी नहीं मिलते, इस कमी को पूर्ण करने के लिये, महिलाओं को प्रशिक्षित कर महिला पुजारी के पद पर नियुक्त कर उन्हें योग्य वेतन प्रदान कर रखा जा सकता है। भगवान का प्रतिदिन अभिषेक पूजा होना भी तीर्थों की उन्नति का कारण है।

14) सभी तीर्थों पर आहार दान व्यवस्था के लिये जैन महिलाओं की नियुक्ति करना चहिये, यदि हमारे तीर्थ सभी दृष्टि से परिपूर्ण होंगे, साधु संतो के लिये त्यागी निवास की व्यवस्था होगी तो तीर्थों का विकास निश्चित ही होगा।

15) महिला दिन के उपलक्ष में महिलाओं को **'तीर्थ क्षेत्र कमेटी'** में आजीवन सदस्य बनने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

16) महिलाओं को सदस्यता राशि में 50% छूट देकर सदस्य बनाया जा सकता है। तीर्थ वंदना में प्रकाशित, तीर्थ, तीर्थ संरक्षण और जीर्णोद्धार संबंधित लेखों प्रेरित होकर तीर्थ संवर्धन में तन-मन और धन से सहयोग दे सकती है। हमारी जैन परम्परा का सांस्कृतिक इतिहास धरोहर के रूप में प्राचीन तीर्थों में सुरक्षित है यदि उन्हें नष्ट कर देते है तो जैन धर्म व संस्कृति विघटित होकर नष्ट हो जायेगी, तीर्थों का विकास रुक जायेगा **तीर्थों को बचाना भी उनका विकास है।**

तीर्थों की उपेक्षा सरासर तीर्थंकरों का अनादर है।
याद रहे हर तीर्थ में गुंजित जैन धर्म के स्वर है।
जिसके दिल में प्राचीन धरोहर की रक्षा के भाव नहीं,
धर्म नहीं उसके दिल में, वो बस एक अधर्मी है।

एक सामान्य अध्ययन के अनुसार जैन समाज हर दिन लगभग 5 करोड़ रूपये छोटे-बड़े आयोजनों में दान देता है परंतु आश्चर्य है कि इतनी बड़ी राशि से एक भी सार्थक कार्य नहीं दिखता, सिवाय भव्य मंदिरों के निर्माण के, इसमें अब महिलाओं को अग्रसर होकर परिवार के लोगों से आत्मविश्वास पूर्वक चर्चा कर नये तीर्थों के निर्माण की अपेक्षा प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार कितना आवश्यक है, ये समझाकर सभी सुविधाओं से युक्त प्राचीन तीर्थों का ही नवनिर्माण ही हो इस पर जोर देना चाहिये।

सबका साथ- तीर्थों का विकास :-

तीर्थों के विकास के कुछ ऐसे भी पहलू है जिनका यदि जिक्र न किया जाये तो लेख अधूरा रह जायेगा।

वापी कूप तडागनि, प्रासाद भवनानि च
जीर्णोद्धारयेद्यस्तु, पुण्यभ्रष्ट गुणं लभेत।

आठ नवीन मंदिर बनाने जो पुण्य संचय होता है वह पुण्य एक प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार कराने से हो जाता है।

बुंदेलखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु जैसे प्रदेशों में आज भी जैन समाज आर्थिक पिछडेपन से जूझ रहा है, वहाँ पुरातन संस्कृति और देवालय जीर्णोद्धार के लिये आकुल-व्याकुल हो रहे है। यदि साधु सम्प्रदाय इन पुराने तीर्थों को गोद ले तो तीर्थों की प्रगति होगी भक्तों का आना-जाना लगे रहेगा, चहल-पहल बढ़ेगी विकास कार्य भी होगा।

तीर्थों की प्रगति हेतु, हमारे युवा जो कंपनी में उच्चपद पर विभूषित है उनको विश्वास में लेकर, तीर्थो के विकास में उनकी सलाह ली जा सकती है,

शुभ शक्ति के रहते हुए, उपकार नहीं जिसने किया।
होते हुऐ भी सम्पदा, नहीं दान तीर्थों को दिया।।
सुन आर्तवाणी तीर्थों की, जिसका नहीं पिघला जिया।
सेवा न की यदि तीर्थों की, व्यर्थ वह जग में जिया।।

तीर्थों के प्रगति में हमारी अव्यवहारिक दृष्टि एवं असमंजसपना :-

भव्य नये मंदिरो का निर्माण बृहद परिणाम में हो रहा है उसमें जैन समाज की अपार धन राशि का व्यय तो हो रहा है साथ ही साथ प्राचीन तीर्थ उपेक्षित हो रहे है। धनाढ्यता का जो प्रदर्शन पंचकल्याणक महोत्सव व अन्य कोई भी धार्मिक कार्यक्रम में देखा जाता है। इससे प्रभावना कम दूसरे समाज के लिये ईर्ष्या का विषय बन रहा है। यह इर्ष्या कही जैन समाज के लिये घातक न बन जाये। हिन्दी की प्रमुख लोकप्रिय पत्रिका सरिता में जैन धर्म, साधुवर्ग, महामस्तकाभिषेक के विरोध में लेख आने प्रारंभ हो चुके है, हमे दिखावा बंद करना चाहिये। क्यों हम बीमार या दयनीय तीर्थो की सुध नहीं लेते, क्यों हम नये मंदिर तोड़कर फिर नये मंदिर बनाने में लगे है? इसपर महिलाओं को भी विचार कर, आवाज उठाने की आवश्यकता आ पड़ी है। तीर्थों का विकास यदि हम चाहते है तो आवाज उठानी पड़ेगी। महिलाओं को आगे आना पडेंगा।

समापन

सभी तीर्थ हमारे लिये समाज रुप से पूजनीय होते है लेकिन वर्तमान में हम देखते है कि कुछ क्षेत्रों का अति विकास और कुछ क्षेत्र नाम शेष होने की स्थिति में है। इसके लिये हम स्वयं जिम्मेदार है हमारी चमत्कार को नमस्कार की वृत्ति इसके लिये दोषी है। हम सर्वथा संतों को दोषी नहीं ठहरा सकते हमे आत्ममंथन करना पडेगा कि क्या कारण है कि उन्हें नये तीर्थों के निर्माण की आवश्यकता महसूस हुई, क्यों हमारे तीर्थ बीमार व दयनीय अवस्था में है? क्योंकि हमने सर्वप्रथम इस पर ध्यान नहीं दिया जब सर से पानी गुजर रहा है। तब हम उसके चिकित्सा में लगे है वह भी नाम मात्र उपरी तौर पर, जब तक जड़ से इलाज नहीं होगा तब तक विकास संभव नहीं है जो गलती हमने की है उसका फल तो हमें भुगतना ही है चाहे वो तीर्थों को गंवाने के रुप में हो या कोर्ट कचहरी के रुप में हो, हानी तो तीर्थों की और हम सभी की है।

फिर भी हमे निराश न होकर निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये, सूर्य की एक किरण भी अंधकार को मिटा सकती है। और हमारे तीर्थ जगमगा सकते है। इसी आशा के साथ सभी परम पावन तीर्थों को त्रिवार नमन।

आज भी सार्थक हैं भगवान महावीर के सिद्धांत

–डॉ. सुनील जैन 'संचय'

भगवान महावीर अब हमारे बीच नहीं हैं पर भगवान महावीर की वाणी हमारे पास सुरक्षित है। महावीर की मुक्ति हो गई है पर उनके विचारों की कभी मुक्ति नहीं हो सकती। आज कठिनाई यह हो रही है कि महावीर का भक्त उनकी पूजा करना चाहता है पर उनके विचारों का अनुगमन करना नहीं चाहता। उन विचारों का यदि अनुगमन किया जाता तो देश की स्थिति ऐसी नहीं होती। भगवान महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है, क्रांति का दर्शन है। उनकी ऋतंभरा प्रज्ञा ने केवल अध्यात्म या धर्म को ही उपकृत नहीं किया, व्यवहार जगत को भी संवारा। उनकी मृत्युजंयी साधना ने आत्मप्रभा को ही भास्वर नहीं किया, अपने समग्र परिवेष को सक्रिय किया। उनका अमोघ संकल्प तीर्थंकर बनकर ही फलवान नहीं हुआ, उन्होंने जन–जन को तीर्थंकर बनने का रहस्य समझाया। एक धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करके ही वे कृतकाम नहीं हुए , उन्होंने तत्कालीन मूल्य–मानकों को चुनौती दी।

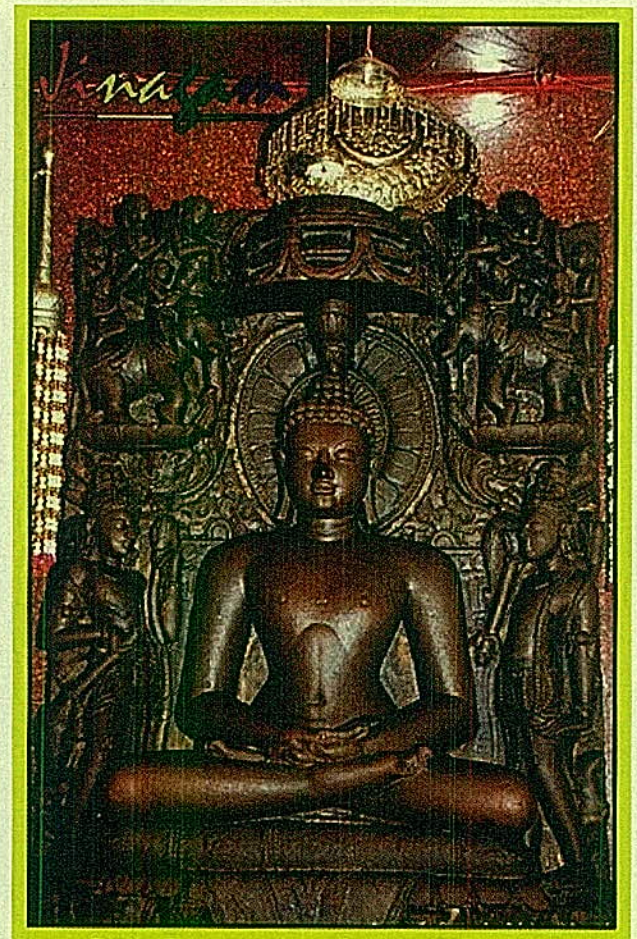

Lord Mahaveer ,Lakhnadaun (M.P.)

भगवान महावीर ने हमें अनेकांत दृष्टि देकर वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराया है। साथ ही साथ हमारे भीतर वैचारिक–सहिष्णुता और प्राणीमात्र के प्रति सद्भाव का बीजारोपण भी किया है। महावीर भगवान अपनी और अपने स्वभाव की ओर देखने वाले थे। वे संसार के बहाव में बहने वाले नहीं थे। हम इस संसार के बहाव में निरंतर बहते चले जा रहे हैं और बहाव के स्वभाव को भी नहीं जान पाते हैं। आत्मस्थ होना यानी अपनी ओर देखना जो आत्मगुण अपने भीतर है उन्हें भीतर उतार कर देखना। अपने आपको देखना अपने आपको जानना और अपने में लीन होना यही आत्मोपलब्धि का मार्ग है। सदियों पहले महावीर जन्मे। वे जन्म से महावीर नहीं थे। उन्होंने जीवन भर अनगिनत संघर्षों को झेला, कष्टों को सहा, दुःख में से सुख खोजा और गहन तप एवं साधना के बल पर सत्य तक पहुंचे, इसलिए वे हमारे लिए आदर्शों की उँची मीनार बन गये।

यदि आज भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धांत, अनेकान्तात्मक विचार, सभी पक्षों को अपने में समाहित कर लेने वाली स्याद्वाद वा.., अहिंसा–युक्त आचरण और अल्प संग्रह से युक्त जीवन वृत्ति हमारे सामाजिक जीवन का आधार व अंग बन जाये तो हमारी बहुत सी समस्यायें सहज ही सुलझ सकती हैं। अतएव हम विश्व शांति के साथ–साथ आत्म शांति की दिशा में भी सहज अग्रसर हो सकते हैं।

तीर्थंकर महावीर स्वामी का विश्वास था–'जो दूसरों को सुख देने का प्रयास करता है वह स्वयं भी सुख पाता है।' अतः उन सेवाभावी का अपने अनुयायियों के लिए उपदेश था–'अनाश्रित और असहाय व्यक्तियों को आश्रय एवं सहयोग–सहायता देने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।' शिक्षा के विषय में तीर्थंकर महावीर का कहना था–'जो चरित्र से हीन है उसके बहुत शास्त्रों के जानने से भी क्या लाभ है?' वह हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह से विरत रहने को चारित्र मानते थे। चरित्र की इस परिभाषा को हम अपने जीवन में जितना उतार पायेंगे और अपने को शिक्षित और सभ्य कहलाने के अधिकारी होगे।

भगवान महावीर को मंदिर में प्रतिष्ठित कर हम उनकी पूजा अर्चना करते हैं, यदि इसी के साथ–साथ उन्हें हम अपने मन मंदिर में बिठाकर अपने आचार–विचार, व्यापार एवं आचरण में ले आयें तो सदाचार, सहिष्णुता का पथ ही हमें भगवान महावीर तक ले जायेगा। हमें भगवान महावीर को मानना ही नहीं, जानना भी है। महावीर को जानने का अर्थ होता है–महावीरमय हो जाना।

बिना महावीरमय हुए महावीर को जाना ही नहीं जा सकता। अहं का अन्त ही महावीर पद की प्राप्ति है।

भगवान महावीर ने जन–जन को समता के उपदेशामृत से आप्लावित ही नहीं किया किन्तु स्वयं के जीवन में जीया। भगवान महावीर जन्म से ही अतीन्द्रिय ज्ञानी थे। उन्होंने कहा तुम जो भी करते हो अच्छा या बुरा, उसके परिणामों के तुम खुद ही जिम्मेदार हो। अपने ज्ञान से उन्होंने प्राणी मात्र में चैतन्य की धारा प्रवाहित होते हुए महसूस की। भगवान महावीर ने आकांक्षाओं के सीमाकरण की बात कही। उन्होंने कहा मूर्च्छा परिग्रह है उसका विवेक करो। भगवान महावीर ने कहा कि मनुष्य के दुखों का मुख्य कारण तृष्णा है। इसलिए वे कहते थे कि अपने दैनिक उपभोग संबंधी वस्तुओं की मर्यादा निश्चित करो और जीवन जीने के लिए जो साधन अति जरूरी हैं, उसी में जीना सीखो। भगवान महावीर के मुख्य पांच सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह मुख्य थे। अहिंसा उनका मूलमंत्र था यानी 'अहिंसा परमो धर्म' क्योंकि अहिंसा ही एकमात्र ऐसा शस्त्र है जिससे बड़े से बड़ा शत्रु भी अस्त्र–शस्त्र का त्याग अपनी शत्रुता समाप्त कर आपसी भाईचारे के साथ पेश आ सकता है।

भगवान महावीर ने मानव शरीर में एक जाग्रत जीवात्मा के रूप में देवत्व प्राप्त किया। भगवान महावीर ने जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक दर्शन का प्रतिपादन किया। उन्होंने दृढ़ता से कर्म के सिद्धांत का अनुपालन करते हुए कहा कि कर्म अर्थात् हमारे कार्यों से ही हमारे भाग्य का निश्चय होता है। उनके उपदेशों में यह बताया गया है कि व्यक्ति जन्म, जीवन, पीड़ा, कष्ट तथा मृत्यु से मुक्ति पाते हुए कैसे मोक्ष अथवा निर्वाण प्राप्त करे।

भगवान महावीर ने धर्म को जटिल कर्मकाण्ड से मुक्त करके सरल बनाया। उन्होंने सिखाया कि मानव जीवन सर्वोच्च है और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर बल देते हुए प्रेम के सार्वभौमिक सिद्धांत का उपदेश दिया। किसी भी मनुष्य के विभिन्न परिणाम, आकार और रूप से प्रेम और सम्मान के पात्र हैं।

भगवान महावीर ने अपने जीवन काल में बहुत–सी सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति और समाज सुधार के लिए सम्यक् आस्था, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण के सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्री दासता, महिलाओं के समान दर्जे और सामाजिक समता जैसे विषयों पर सामाजिक प्रगति की शुरूआत की।

एक लम्बे समय से हम भगवान महावीर के जन्मोत्सव और निर्वाणोत्सव मनाते आ रहे हैं। हर अगले जन्मोत्सव या निर्वाणोत्सव पर ऐसा लगता है कि उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों और शिक्षाओं को जन–जीवन में लागू करने की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है। प्रतिवर्ष यह आवश्यकता बढ़ती जा रही है, क्योंकि हम हमेशा भगवान महावीर के नाम पर आयोजन करते हैं, किन्तु नजदीक से देखने या समझने का प्रयास नहीं करते। उनके जन्मोत्सव पर हम केवल उनका गौरव गान ही न करें, अपितु उनकी शिक्षाओं और सिद्धांतों को जीवन में उतारें और दूसरों को भी यही प्रेरणा दें। यह निश्चित है कि आज की दुःखी दुनिया यदि भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत जैसे सिद्धांतों को अपनाये उन पर निष्ठापूर्वक आचरण करे तो चारों ओर व्याप्त वर्तमान अशांति, दुःख तथा संत्रास दूर होते अधिक समय नहीं लगेगा।

भगवान महावीर की साधना त्याग और विसर्जन की साधना थी। उन्होंने मुनि दीक्षा लेते समय प्रण किया कि मैं आज से मैं अपने शरीर को आत्मा के लिए समर्पित करता हूं। महावीर ने अपने सत्कर्मों से समाज को एक नई राह दिखाई। इसलिए महावीर एक नाम नहीं बल्कि संस्कृति है, साधना है, जीवन मूल्य है। आज जबकि अनेक तरह की बुराइयों सहित तामसिक प्रवृत्तियां बढ़ती ही आ रही हैं, ऐसे में भगवान महावीर के आदर्श और सिद्धांत ही सुखी जीवन का पर्याय बन सकते हैं।

भगवान महावीर की शिक्षाएं आर्थिक असमानता को कम करने की आवश्यकता के अनुरूप हैं। उन्होंने बताया कि अभाव और अत्यधिक उपलब्धता दोनों ही हानिकारक हैं। आज के समय में धन पर कुछ लोगों का अधिकार, बढ़ती हुई असहिष्णुता का एक कारण है। भगवान महावीर के उपदेश आज भी अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं। उन्होंने उपदेश दिया कि कोई भी जन्म से निर्धन अथवा धनी नहीं होता। उन्होंने कहा था कि व्यक्ति को अपने जन्म से नहीं बल्कि कार्यों द्वारा जाना जाना चाहिए। ऐसे सिद्धांत पर अमल करने से आधुनिक समाज के निर्माताओं द्वारा संकल्पित न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के आदर्श को बढ़ावा मिलेगा। भगवान महावीर के दर्शन के तीन सिद्धांत–अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह बहुत–सी आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं।

देवगढ़ रोड, स्टेशन के पास,
ललितपुर–284403 उत्तर प्रदेश
मो. 9793821108

श्री महावीर की देशना

- सुबोध मलैया

भगवान महावीर स्वामी ने अपनी दिशा बदली और उनकी दशा बदल गयी, वे सरागी से वीतरागी हो गए, अज्ञानी थे, केवल ज्ञानी हो गए। हमारे जैसे इन्सान थे, महान हो गए। महान ही नहीं भगवान हो गए।

भगवान श्री महावीर स्वामी कहते हैं जो शरीर को ही आत्मा समझते हैं या आत्मा को शरीर समझते हैं वे बरिरात्मा है, मिथ्यादृष्टि है। ऐसे बरिरात्मा-मिथ्यादृष्टि जीव आत्मा से बेखबर होते हैं, मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जी पुद्गल की पर्यायों में उलझाकर उन्हें ही सत्य मानकर स्वयं को सुखी-दु:खी, राजा-रंक, अमीर-गरीब, प्रवाहहीन, प्रभावशील, सबल-निर्मल, सुन्दर-असुन्दर, ज्ञानी और अज्ञानी समझता है। स्वयं से अत्यन्त भिन्न, पति-पत्नि, माता-पिता को अपनाता है, ऐसे मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जीवों को समझाते हुए भगवान श्री महावीर स्वामी कहते हैं हे भव्य जीव, यदि सच्चा सुख चाहता है तो पर पदार्थों से रागादि छोड़कर अपनी आत्मा का ध्यान कर, पर में ही तत्पर मत रह। दूसरों की चिन्ता में ही अपना बहुमूल्य समय बर्बाद मत कर, अपनी आत्मा की भी चिन्ता कर, क्योंकि आत्मा के चिन्तन कर, क्योंकि आत्मा के चिन्तन से ही सच्चा सुख प्राप्त होगा।

भगवान महावीर, चूलगिरि-जयपुर

भगवान महावीर का यह संदेश सच्चे सुख के लिए साधना में जुटने की बजाए भौतिक सुख-सुविधाओं में लिप्त हैं। जबकि सुख साधनों में ही नहीं आत्म साधना में है यह महावीर स्वामी का ही नहीं सभी साधकों का अनुभव है। अपनी चिन्ता करो दूसरों की चिन्ता छोड़ों। दूसरों की चिन्ता करते-करते न जाने कितना समय व्यतीत कर दिया। सुख की प्राप्ति दूसरों की चिन्ता करने से नहीं, अपनी आत्मा का चिन्तन करने से होती है इसीलिए भगवान श्री महावीर स्वामी कहते हैं- उत्तमा स्वात्म चिन्तन अपनी आत्मा की चिन्ता करना ही उत्तम है यही समझदारी है। महावीर स्वामी ने अपनी आत्मा की चिन्ता की इसलिए वे महावीर हो गए। महावीर की तरह अपनी आत्मा की चिन्ता करेंगे तब एक न एक दिन महावीर जैसे बन जावेंगे। महावीर बनने की इच्छा रखने वाले हम सभी जन महावीराष्टक के एक-एक शब्द, एक-एक पंक्ति की गहराई में उतरें ताकि जो महावीर ने पाया है उसे हम भी पा सकें। महावीर स्वामी ने ज्ञान की जगह ध्यान पर ज्यादा जोर दिया है यही कारण है कि सभी तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाएं ध्यान अवस्था में ही होती हैं। महावीर का ज्ञान ध्यान की गहराइयों में डूबने से ही केवल ज्ञान बन सका है, क्योंकि ध्यान की अग्नि ही कर्मों के समूह को जलाने में सक्षम है हमें भी महावीर स्वामी की बात आत्मसात करना है ताकि हमारा ज्ञान भी केवलज्ञान हो सके। भगवान के ज्ञान में तीन लोकों में रहने वाले जीवों के सुख-दुख झलकते हैं वे हमें सुखी-दुखी देखते हैं तब भी उनके मन में हमारे लिए करुणा जागृत नहीं होती है क्योंकि वे राग-द्वेष से रहित वीतरागी है उनका उपदेश भी निष्प्रह भाव से होता है पुण्य से पुरुष तो बन गए अब महापुरुष बनने का पुरुषार्थ भी करें इस मार्ग पर हम जैसे ही चलें अपनी आंखों में महावीर स्वामी बसाके चलें।

आज महावीर नहीं हैं पर उनकी अहिंसा आज भी है। आज राम नहीं हैं पर उनकी मर्यादा आज भी है। आज कृष्ण नहीं है पर उनका कर्मयोग आज भी है। आज बुद्ध नहीं हैं पर उनकी करुणा आज भी है। आज नानक नहीं हैं पर उनका ज्ञान आज भी है। आज विवेकानंद नहीं हैं पर उनका स्वाभिमान आज भी है। आज गांधी जी नहीं हैं पर उनकी स्वतंत्रता आज भी है। इन्होंने अपनी ऊर्जा का उपयोग आत्म कल्याण के साथ जन-कल्याण में किया जो आज उनके नहीं होने के बाद भी ऐसा लगता है जैसे वे हमारे बीच ही हैं। जैन धर्म पुरुषार्थ प्रधान धर्म है, पुरुषार्थ ही हमारे भाग्य को जागृत करता है। महावीर स्वामी भाग्य से नहीं अपने पुरुषार्थ से भगवान बने हैं। हमारा पुरषार्थ हमें जो चाहे वह सकता है। महानता व्यक्ति के कर्म से आती है। व्यक्ति जन्म से नहीं। कर्म से महान होता है।

आज के भौतिकवादी दौर में समाज की युवा पीढी में संस्कारित पारिवारिक मूल्यों में गिरावट आई है। युवा पीढी भौतिक परिवेश में ढलकर स्वयं को ज्यादा ही समझने लगी है। खान-पान और रहन-सहन में अशुद्धता और फूहड़ता दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है ऐसे माहौल में आज महावीर पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गए हैं। समय रहते यदि समाज नहीं चेती तब महावीर का धर्म सिर्फ चर्चाओं में रह जायेगा जबकि महावीर का जैन धर्म चर्चा का नहीं, धर्म का विषय है। महावीर ने अपने जीवन को ऐसे जिया कि स्वयं को जीतकर महावीर हो गए। यदि हमें भी कुछ बनना है तो जीने का अंदाज बदलना होगा और वह भी कल नहीं आज बदलना होगा। महावीर को जानने की कम, जीने की ज्यादा आवश्यकता है, महावीर को जीने वाला ही महावीर का सच्चा अनुयायी होता है महावीर को जीने का अर्थ है, महावीर की मानना और महावीर को जानने का अर्थ है महावीर को मानना।

आदि ब्रम्हा युग सृष्टा मगवान ऋषभदेव एवं उनकी क्रान्तिकारी शिक्षायें

- ध्रुव कुमार जैन

आदि ब्रम्हा युग सृष्टा प्रजा पालक भगवान ऋषभदेव का जन्म चैत्र यदी नवमी के दिन सूर्योदय के समय उत्तराषाढ़ नक्षत्र में ब्रम्ह नामक महायोग में अन्तिम कुलकर अयोध्या के महाराज नामिराय की महारानी मरुदेवी के गर्म से उस समय हुआ था, जब भोगभूमि का अन्त और कर्म भूमि का आरम्भ हो गया था तथा मनुष्य के जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले कल्पवृक्ष भी समाप्त हो गये थे। व्यथित मानव जीवन को सजाने-सवारने, उनकी आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति हेतु उनमें ज्ञान-विज्ञान का सन्देश प्रवाहित करने और इस प्रवर्तित युग में कर्म के सिद्धान्तों को उनमें जागृति करने, इस भारत भूमि की पावन धरा पर ऋषभदेव रुपी सूर्य का उदय हुआ।

आदि तीर्थंकर के इस पावन घरा पर अवतरित होते ही प्रकृति अत्यन्त उल्लास से भर गया; आकाश एकदम निर्मल और स्वच्छ हो गई, शीतल मंद सुगंधित पवन बहने लगी, वृक्ष स्वयं पुष्प बरसाने लगे, देवों के दुन्दभि स्वयं बजने लगे और ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानों समुद्र, पृथ्वी और आकाश हर्ष से थिरक रहे हों। चारो तरफ केवल उत्साह ही उत्साह था। स्वर्ग से देवतागण भी भगवान के जन्मोत्सव में सम्मिलित होने के लिए आयोध्या पधारे और खूब उत्सव किया।

सौधर्म इन्द्र अपनी पूरी देव सेना के साथ सुमेरुपर्वत के पाण्डुक शिला पर भगवान का महाभिषेक क्षीर सागर के जल से करने उनका नामकरण पुरुदेव के नाम से किया और मुख्य नाम वृषभदेव रखा। नामिराय और मरुदेवी ने भी प्रभु का नामकरण किया और उनका नाम ऋषभदेव रखा। इस अवसर पर प्रजा ने भी अनेक उत्सव किये।

आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव द्वारा किया गया हर कार्य एक शिक्षा थी- इस कर्म भूमि में जीने को उनके द्वारा अपनाया गया हर मार्ग एक दिशा थी मानवता की ओर अग्रसर होने की और उनकी हर मधुर वाणी एक सन्देश था विपरीत परिस्थितियों में खुद को स्थापित करने की।

भगवान ऋषभदेव ने यशस्वती और सुनन्दा के साथ विवाह करके विवाह प्रथा के साथ-साथ एक सभ्य समाज की व्यवस्था का शुभारम्भ किया। पहले युगलिया काल में प्रकृति में एक अद्भुत बात देखी जाती थी और वह यह भी कि एक स्त्री के युगल सन्तान उत्पन्न होती थी। इस युगल में एक कन्या और दूसरा पुत्र होता था। ये सहजात भाई-बहन ही बड़े होकर पति-पत्नी के रुप में आचरण करने लगते थे। उस समय समाज में विवाह नाम की कोई प्रथा नहीं थी। उनके विवाह के उपरान्त इस नयी व्यवस्था का सृजन हुआ। भगवान ने पुत्रियों और पुत्रों के माध्यम से लिपि-अंक-शास्त्र और शस्त्र कला का ज्ञान कराया।

भगवान ऋषभदेव ने लोक व्यवस्था में प्रजा को असि,मसि, कृषि, विद्या,वाणिज्य और शिल्प इन षट-कर्मों का उपदेश दिया। इसकी व्याख्या में बताया गया कि तलवार आदि धारण कर कर सेवा करता असि कर्म कहलाता हैं, लिख-पढ़कर आजीविका चलाना मीस कर्म है, जमीन को जात-बोना कृषि कर्म है, विभिन्न विधाओं द्वारा आजीविका चलाना विद्या कर्म है व्यापार करना वाणिज्य कर्म और हस्त की कुशलता से जीविका चलाना शिल्प कर्म है। भगवान ने प्रजा के जीवन-धारण की प्रमुख समस्या का समाधान करके प्रजापति कहलाये।

भगवान ने उक्त छह कर्मों के आधार पर हो तीन वर्णों की स्थापना करते वर्ण व्यवस्था की स्थापना की। इन तीन वर्णों में क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। उन्होंने तीन वर्णों के माध्यम से पूरे मानव समाज में विभाजन उनके कर्मों के अनुसार की इसकी व्याख्या में उन्होंने बताया कि जो शस्त्र धारण कर आजीविका करते है, वे क्षत्रिय हैं, जो खेती, व्यापार तथा पशुपालन के द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं, वे वैश्य कहलाते है और जो शिल्प द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं तथा दूसरों की सेवा करते हैं, वे शूद्र कहलाते हैं।

वर्ण व्यवस्था के पश्चात भगवान ऋषभदेव ने इन्द्र की सहायता से ग्राम, नगर, खेट, खर्वट, पत्तन, द्रोणमुख, सवाह आदि की संरचना करके पूरे भरत क्षेत्र में नागर सभ्यता की नींव रखी। इसके पश्चात् सम्पूर्ण क्षेत्र को 52 जनपदों में विभक्त कर दिया और सबकी परिभाषायें निश्चित की।

इन सामाजिक व्यवस्थाओं के आधार पर भगवान ने मानव समाज को जागरुक करने का प्रयास करते हुए एक सुरशासन की नींव रखी। पूरी पृथ्वी को 52 भागों में विभक्त कर पर एक नये साम्राज्य के गठन और संचालन का इतिहास लिखा। कर्म युग की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए प्रजा को उनके बारे में आगाह कर उनसे मुकाबले का मार्ग बताया। नयी-नयी व्यवस्थाओं के माध्यम से समाज में तमाम सृष्टियां की। उनके द्वारा किया गया प्रत्येक आविष्कार आज भी मानव समाज का दर्पण है और इसके लिए सम्पूर्ण प्राणी जगत सदैव उनका ऋणी रहेगा।

गृहस्थ क्षेत्र के बाद भगवान ने वैराग्य क्षेत्र में भी कदम रखकर मानव को उनके आत्म-कल्याण की शिक्षा दी, उन्हें एक नई दिशा दी। केवलज्ञान के पश्चात् भगवान ने सम्पूर्ण देश में विहार किया। गृहस्थ दशा में उन्होंने लोक को बदला था, लोक व्यवस्था को बदला था और अब वे लोक मानस को बदलने में लग गये। पहले कर्मव्यवस्था बनाई और अब वे धर्म व्यवस्था बनाने लगे। धर्म की उस पावन मंदाकिनी में उस समय कौन है जो नहीं धुल पाया। उनका अलैकिक व्यक्तित्व सब को प्रभावित कर गया। वर्तमान में भी उनकी शिक्षायें मानव समाज और प्राणीमात्र का कल्याण कर सकने में समर्थ है, बशर्ते वे भी उस पथ के पथिक बनें।

ऋषभदेव जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश क्यों नही?

जैन र्ध के शीर्ष आराध्य भगवान ऋषभदेव की पावन जयन्ती का पुन: मंगल आगमन 22 मार्च 2017 को हो रहा है। चैत्र कृष्ण नवमी ही वह पावन तिथि है जब इस विशाल भारतवर्ष की पावन धरा पर भगवान ऋषभदेव ने जन्म लेकर इस युग के प्रथम तीर्थंकर के रुप में जैन-धर्म की नींव रखी। इसी पावन

तिथि पर जैन धर्मानुयायी इनकी जयन्ती धूम-धाम से मनाकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते आ रहे हैं। परन्तु बड़े दुख की बात है कि जैनेतर समाज में हमारे आदि-तीर्थंकर की कोई परिकल्पना ही नहीं है, क्योंकि वह तो केवल भगवान महावीर को ही जैन धर्म का संस्थापक मानता है।

यह कैसी विडम्बना थी कि भारत सरकार और भारतीय इतिहासविदों ने हमारी आस्था के साथ खिलवाड़ करते हुए हमारे प्रथम तीर्थंकर के स्थान पर 24वें और अन्तिम तीर्थंकर महावीर को ही जैन धर्म का संस्थापक बना डाला और हम चुप रहे। जिसके परिणामस्वरुप अति प्राचीन जैन धर्म, बुद्ध धर्म के समकक्ष खड़ा नजर आया और जैनेतर समाज में जैन-धर्म की प्राचीनता लगभग 2600 वर्ष ही आंकी जाने लगी। इस विचारधारा पर अन्तिम मुहर लगाने का काम महावीर जयन्ती पर घोषित सार्वजनिक अवकाश ने कर दिया और हम फिर भी चुप रहे और उसी में ढ़ल गये।

समय ने करवट ली. समाज इस बात पर चिन्तन करने लगा कि महावीर नहीं ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं। तमाम पूजन पंडालों, चतुर्विध संघों और जैन समाजों में इस बात का विरोध हुआ कि महावीर जैन धर्म के संस्थापक है परिणाम स्वरुप भारत सरकार और इतिहासविदों ने अपनी गलतियों का अहसास किया और ऋषभदेव को जैन धर्म के संस्थापक का स्थान दिया। जैन धर्म के लिए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। भारत सरकार द्वार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का नाम संस्थापक के रूप में स्वीकार करना, जैन धर्म की अतिप्राचीनता को स्वीकार करना है। परन्तु जैनेतर समाज में अभी भी जैन धर्म के संस्थापक के रूप में महावीर को ही स्थान प्राप्त है।

प्रश्न यह है कि ऐसा क्या किया जाये कि जैनेतर समाज में भी जैन-धर्म की प्राचीनता का सही और वास्तविक आकलन हो? ऋषभदेव को जैन धर्म के संस्थापक के रूप में मानकर भारत सरकार ने जैनधर्म की प्राचीनता का सही आकलन तो कर लिया परन्तु विशाल जनमानस, जो आज भी महावीर को ही जैन धर्म की संस्थापक मान रही उसे जैन धर्म की प्राचीनता का आकलन कैसे हो? इस पर कुछ भी नहीं किया।

भारत सरकार और इतिहासविदों द्वारा की गयी गलती से जैन धर्म को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। ऐसा क्यों हो गया? यह समझ से परे है। प्राचीन काल से ही वैदिक ग्रन्थ, पुरातत्वविदों, इतिहासविद सभी जैन धर्म की अति-प्राचीनता से वाकिफ थे, फिर महावीर को संस्थापक का स्थान क्यों मिला? क्या यह उनकी कोई कुटिलता तो नहीं? जब भगवान महावीर को जैन धर्म के संस्थापक के रुप में स्थान मिला था तो उनकी जयन्ती पर अवकाश देना भारत सरकार का कर्तव्य बनता था और जब उन्होंने भगवान ऋषभदेव को संस्थापक के रुप में स्वीकार कर लिया तो उनकी जयन्ती पर अब तक सार्वजनिक अवकाश क्यों घोषित नहीं हुआ?

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ सभी धर्मों का आदर किया जाता है। सभी धर्मों में उनके शीर्ष आराध्यों के प्रति सच्ची उपासना हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा भी सहयोग किया जाता है और यह सहयोग उनके जन्म दिवस या निर्वाण दिवस पर अवकाश घोषित करके भी किया जाता है। यह सार्वजनिक अवकाश ही इस देश के विशाल जनमानस को उनके जीवन दर्शन के बारे में सोचने को विवश कर देती है। प्रश्न यह है कि यदि सभी धर्मों के शीर्ष आराध्यों के प्रति सच्ची उपासना हेतु उनकी जयन्ती या निर्वाण दिवस पर भारत सरकार द्वारा सहयोग के रुप में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाता है, तो जैन धर्म के शीर्ष आराध्य प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की जयन्ती या निर्वाण दिवस पर सार्वजनिक अवकाश क्यों नहीं? जबकि वे ही जैनधर्म के संस्थापक हैं।

सर्वप्रथम भारत सरकार या राज्य सरकारों को चाहिए कि वे ऋषभदेव चाहिए कि वे ऋषभदेव जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करे, क्योंकि अब राष्ट्र ने भगवान ऋषभदेव को जैन धर्म का प्रवर्तक मान लिया है और यदि वे ऐसा नहीं कर रहे है तो हमारे जैन समाज एवं जैन सगठनों का दायित्व बनता है कि वे इस ओर सार्थक प्रयास करें। अवकाश की परिकल्पना मात्र एक अवकाश ही नहीं, बल्कि जन-जन के जैन धर्म की प्राचीनता और उसके शीर्ष आराध्य के प्रति चिन्तन कराना है। जैन धर्म की प्राचीनता जैनेतर समाज में पहुँचाने हेतु ऋषभदेव जयन्ती पर अवकाश से बेहतर अन्य कोई माध्यम नहीं।

यद्यपि विगत कुछ वर्षों से जैन समाज और जैन संगठनों द्वारा ऋषभदेव जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश की मांग राष्ट्रीय एवं प्रदेश सरकारों से आरम्भ हुई परन्तु सफलता शून्य। क्योंकि यह मांग केवल पतों के माध्यम से हुई साथ ही इस विचार के साथ कि अवकाश मिलना असम्भव है। न माननीयों से मुलाकात और न ही उसके प्रस्तुतीकरण पर जोर।

इतिहास गवाह है कि जब-जब जैन समाज और जैन संगठनों ने अपनी जो भी मांग रखी भारत सरकार प्रदेश सरकार और माननीय न्यायालयों ने इस विचार के साथ पूरा किया है कि जैन समाज की कोई भी मांग अनुचित होती ही नहीं। आज तक किसी भी मांग से संगठनों को पीछे नहीं हटना पड़ा, देर-सबेर वह सुविधा दी ही गयी है। अपने इस लेख के माध्यम से जैन स और संगठनों के माननीयों से जानना चाहता हूँ कि, अब-तक ऋषभदेव जयन्ती पर अवकाश क्यों नहीं प्राप्त हुआ। क्या जन-जन तक जैन धर्म की प्राचीनता का सन्देश पहुँचाना गलत है? क्या इस अवकाश से बेहतर अन्य कोई माध्यम है? क्या पत्राचार से यह अवकाश प्राप्त होना सम्भव है? आदि-आदि।

आइये, हम सभी यह संकल्प लें कि वर्ष 2017 की ऋषभदेव जयन्ती पर हम यह अवकाश लेकर रहेगे। यदि पूरे देश में नहीं, तो कम से कम उत्तर प्रदेश में अवश्य ही घोषित करायेंगे। जहाँ अयोध्या है, क्योंकि अयोध्या ही ऋषभदेव की जन्म स्थली है। यदि हमारा समाज और सामाजिक संगठन ऐसा करने को ठान ले तो यह अवकाश अवश्य ही आसानी से मिल जायेगा और हमारा जैन धर्म इस राष्ट्र के मानस पटल पर बौद्ध धर्म के समकक्ष न होकर प्राचीनतम धर्म के शिखर को प्राप्त कर जायेगा। इन्तजार उस दिन का है जब इस देश का जन-समुदाय यह कह रहा हो कि आज ऋषभदेव की जयन्ती है, जैनियों का पर्व है, ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर और प्रवर्तक हैं, इसलिए आज अवकाश है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की सभा के साथ राजस्थान अंचलीय समिति की साधारण सभा का आयोजन

दिनांक 18 फरवरी, 2017 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन एवं महामंत्री। संतोष जी जैन पेंढ़ारी सहित अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में राजस्थान अंचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों एवं विभिन्न संस्थागत प्रतिनिधियों की संयुक्त मीटिंग दोपहर 2.30 बजे श्री दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी परिसर में स्थित 'शान्तादेवी ताराचन्द बड़जात्या सभागार' में प्रारम्भ हुई।

सर्वप्रथम राष्ट्रीय पदाधिकारियों की मीटिंग सामूहिक मंगलाचरण णमोकार पाठ के साथ प्रारम्भ हुई। तत्पश्चात् महामंत्री श्री संतोषजी जैन पेंढारी ने विगत सभा की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसमें कुछ संशोधनों के साथ सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। कार्यसूची के अनुसार बाद में प्राप्त हुए पत्रों के सम्बन्ध में जानकारी दी। इसके बाद राजस्थान अचंल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा के इस सुझाव पर कि कार्यसूची के तीन एवं चार बिन्दु पर जो श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक प्रदर्शनी से सम्बन्धित थे उन्हें राजस्थान अंचल की सभा में एक साथ ले लिया जाय जिसकी सभी ने अनुमोदना की। अगले पांचवें बिन्दु श्री सम्मेद शिखरजी पर चल रहे विकास एवं भूगर्भ से निकली मूर्तियों के सम्बन्ध में चर्चा की गई। जिस पर सभी का मत था कि विवादों को अगर वार्ताओं से दूर किया जाये तो ज्यादा ठीक होगा। इस संदर्भ में एक समन्वय समिति का गठन भी किया हुआ है जो इस पर कार्य कर रही है। महामंत्रीजी ने सभी विषयों की जानकारी दी एवं राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन द्वारा सभी कार्यों में सहयोग व सहायता की सभी से अपील की।

तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की सभा प्रारम्भ

राष्ट्रीय पदाधिकारियों की मीटिंग के समापन के तुरन्त पश्चात् तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की सभा प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के. गोधा ने अपने स्वागत उद्बोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री जी सहित सभी पदाधिकारियों का स्वागत उद्बोधन देते हुए राजस्थान में पधारने पर उनका आभार व्यक्त किया। इसके पश्चात् उपस्थित सभी आगन्तुक महानुभावों का परिचय देते हुए उनके आने पर उनका स्वागत अभिनन्दन किया एवं उपस्थिति सभी महानुभावों को तिलक व दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मान भी किया। उसके बाद उन्होंने महामंत्री राजस्थान अंचल श्री कमल बाबू जैन को राजस्थान अंचल में हुए कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा।

श्री कमल बाबू जैन ने अपनी प्रगति रिपोर्ट पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा यह सौभाग्य रहा है कि हम आज चौथी बार राष्ट्रीय कार्यसमिति की मीटिंग कर रहे हैं, जो हम सभी के लिए गौरव की बात है। इससे पूर्व भी मैं तीन प्रतिवेदन आपके समक्ष प्रस्तुत कर चुका हूं। दिगम्बर जैन मन्दिर सरवाड़, नीलकण्ठ (अलवर) कूकस जिसे हाल ही में कोटा अधिवेशन में 5 लाख की राशि प्रदान की गई थी। लूंणवा, झालरापाटन, लाखना एवं विराट नगर नसियां के विकास कार्यों की जानकारी दी एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी से सहायता की अपील की। दिनांक 10 एवं 11 दिसम्बर को कोटा में हुए दो दिवसीय अभूतपूर्व सभाओं की भी जानकारी दी गई एवं 55 गिरनार गये पदाधिकारियों का तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल द्वारा दिनांक 31/11/2016 को हुए सम्मान समारोहों की भी जानकारी दी। इसके बाद आंवा महामस्तकाभिषेक एवं जहाजपुर के सम्बन्ध में भी अवगत करवाया गया। मैं स्वयं जहाजपुर गया, वहां के मन्दिरजी आवास एवं सन्त निवास के निर्माण की जानकारी ली। आर्यिका रत्न स्वस्तिभूषण माताजी से हुई वार्ता के बाद उन्होंने यह इच्छा जाहिर की कि तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारियों का दौरा यहां करें व इस क्षेत्र को संभाले। वहां जो समस्याएं हैं उनका निराकरण करें। अन्त में महामंत्री जी ने केन्द्रिय पदाधिकारियों को यह भी आश्वासन दिया कि राजस्थान अचंल आपके दिशा–निर्देष में हमेशा कार्य करता रहेगा। उन्होंने महामंत्री द्वारा लिखे पत्र को भी पढ़कर सुनाया जिसमें राजस्थान अंचल के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई थी।

इसके बाद संयुक्त सभा में फरवरी 2018 में होने वाले महामस्तकाभिषेक श्रवणबेलगोला के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी अध्यक्षा सरिता जी ने दी एवं सभी तरह से सहयोग करने की गुजारिश की। कलश आवंटन, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं अन्य कार्यों को अन्जाम देने के लिए 24 समितियां बनाई गई हैं। प्रथम दिन 235 कलश होंगे। तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा एक विशाल प्रदर्शनी लगाने की जानकारी दी। जिसमें जैन दर्शन, संस्कृति, साहित्य, कला एवं पुरातत्व व तीर्थ जैसे बिन्दुओं पर आधारित सामग्री भिजवाने की अपील की गई। इन सबकी डाकुमेन्ट्री फिल्म भी बनाई जायेगी। उपस्थित महानुभावों ने अपने अपने स्तर पर सुझाव व सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके बाद कूकस की कमेटी ने राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता जी व महामंत्री जी का स्वागत किया, इसके पश्चात् आचार्य विद्यासागर पद यात्रा संघ के श्री मनीष जी चौधरी एवं उनके साथियों ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज जो हमारे प्रधानमंत्री जी को आशीर्वाद देते हुए चित्र को भेंट किया; वसवा समिति के श्री अनिल जी व अन्य सहयोगियों ने भी स्वागत किया। तत्पश्चात् श्री संतोष जी ने सभा का आभार व्यक्त किया एवं राजस्थान अंचल तीर्थक्षेत्र कमेटी का सुन्दर आतिथ्य व सुन्दर व्यवस्था के लिए भूरि–भूरि प्रंशसा करते हुए धन्यवाद दिया। अन्त में सभा को वात्सल्य भोज पर आमंत्रित किया गया।

★★★★

जीर्णोद्धार

श्री सम्मेदशिखरजी - ''सुवर्णभद्रकूट''-पारसनाथ टोंक पर मार्बल की फ्रेम एवं दरवाजे, लंबे समय के अंतराल के बाद पूर्ण हुए। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी शिखरजी के सभी कर्मचारियों को धन्यवाद!

संतोष जैन
महामंत्री

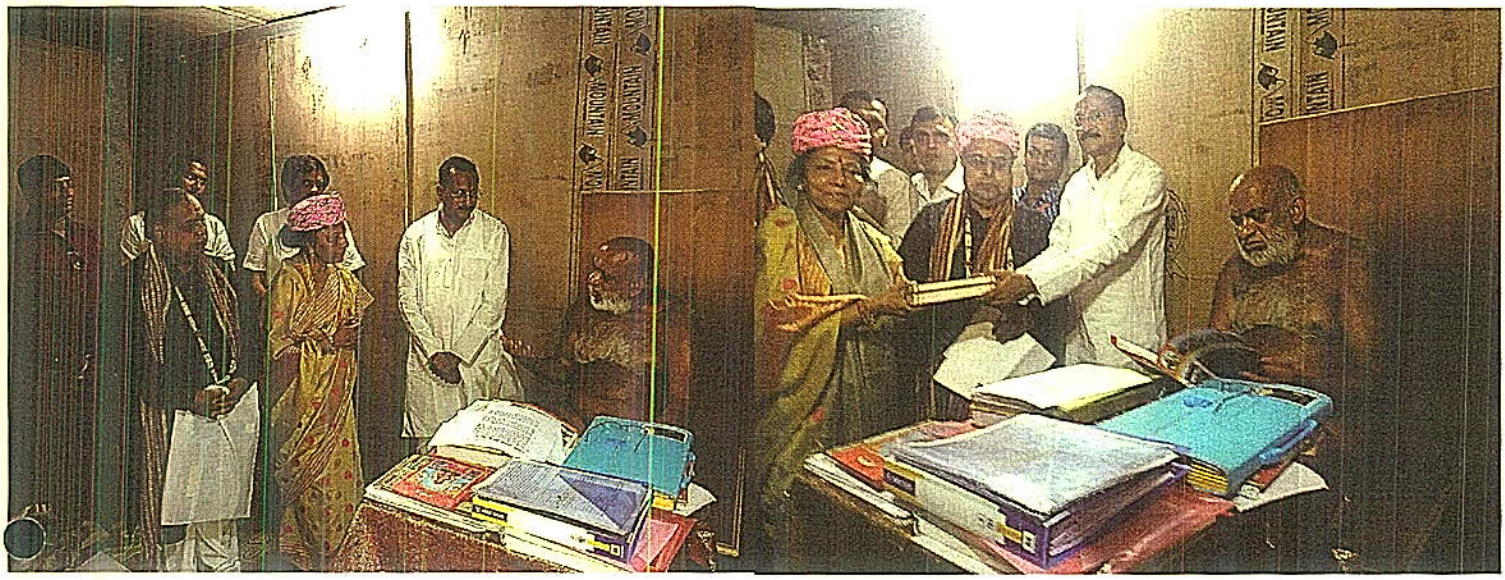

दिनांक १९ फरवरी २०१७ राजस्थान के क्षेत्रो का अवलोकन करते हुये 'डेही' मे प.पू. मुनिपुंगव १०८ श्री सुधासागरजी महाराज को 'गोमटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव' का आमंत्रण एवं वार्तालाप करते हुये भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री संतोष जैन, उपाध्यक्ष श्री हुकमकाका जैन, कोटा, तामिलनाडु - पॉडेचेरी अंचल के अध्यक्ष श्री कमल ठोलिया एवं अन्य

दि. १८ फरवरी २०१७ जयपुर मे तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी परिषद के अवसर पर उपस्थित श्रीमती सरिता एम.के.जैन, संतोष जैन, नीलम अजमेरा, हुकमकाका, कमलजी (महामंत्री राजस्थान अंचल), कमल ठोलिया (अध्यक्ष, तामिलनाडू पॉडेचेरी अंचल), राजेन्द्र गोधा (अध्यक्ष राजस्थान अंचल) श्री पारस जैन बज (ट्रस्टी बंडीलाल कारखाना गिरनार), श्री पांडयाजी मुंबई

दि. १८ फरवरी २०१७ को जयपुर में संपन्न हुई पदाधिकारी परिषद की बैठक के अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन का स्वागत करते हुये जयपुर समाज के सभी गणमान्य महानुभाव एवं महिला मंडल की सदस्याएं

जैन तीर्थवंदना जनवरी २०१७ अंक का विमोचन करती हुई राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, संतोष जैन, हुकमकाका तथा अन्य

दि.१८ फरवरी २०१७ पदाधिकारी परिषद के अवसर पर राजस्थान अंचल के सदस्यों द्वारा महामंत्री श्री संतोष जैन का स्वागत करते हुये।

दि. १९ फरवरी २०१७ राजस्थान क्षेत्रों का दौरा करते हुये श्रीमती सरिता एम.के.जैन, संतोष जैन, हुकमकाका, कमल ठोल्या व अन्य

दि.१९ फरवरी २०१७ को निवई समाज राजस्थान द्वारा स्वागत एवं सभा को संबोधित करते हुये अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन

संवत् 1561 में भट्टारक ज्ञानभूषणजी द्वारा प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन प्राचीन मंदिर

- आश्विन पी. गांधी, ईडर

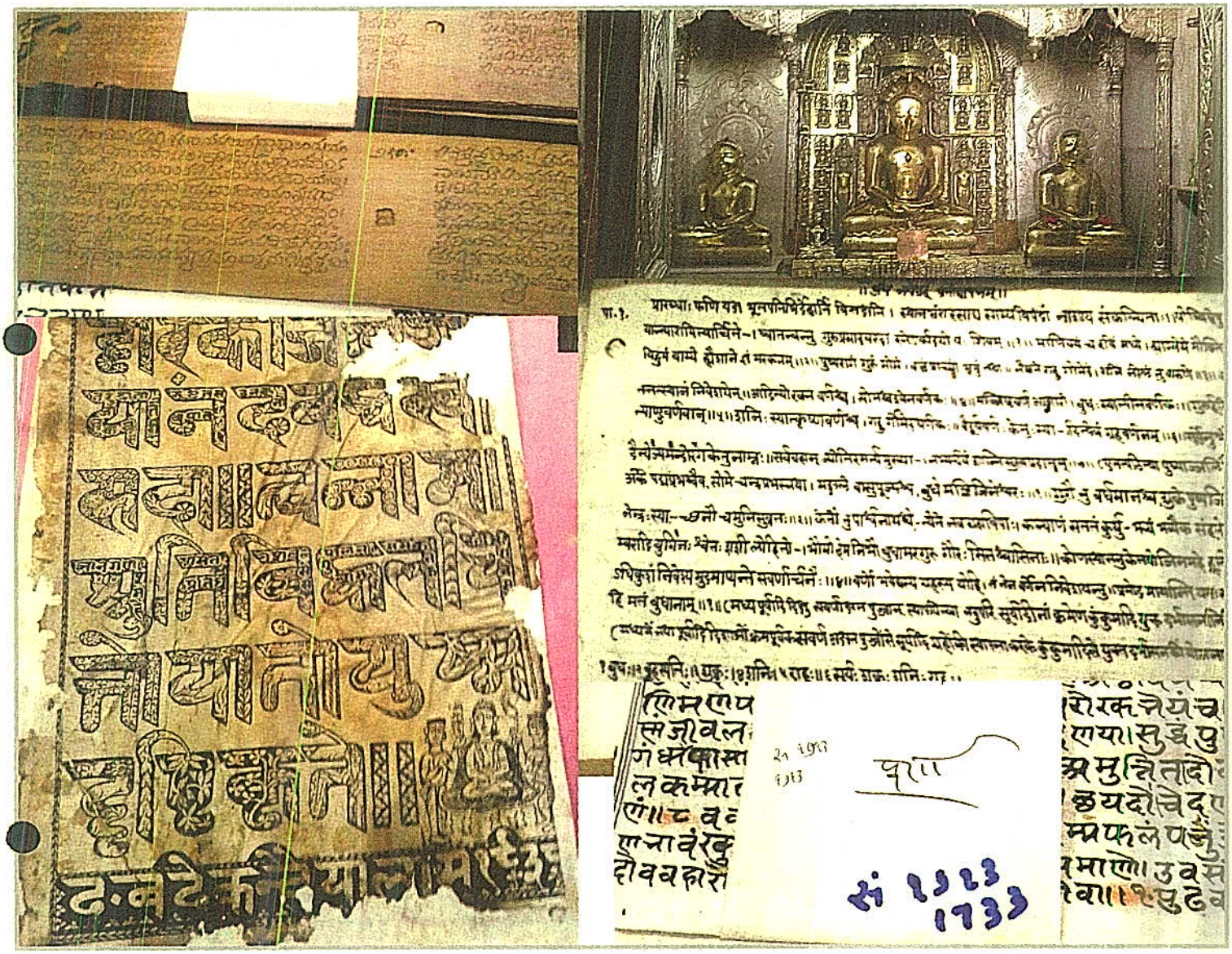

श्री पार्श्वनाथ दिग.जैन प्राचीन जिनालय जिसका निमोठा श्री हूमड़ जैन समाज के द्वारा किया गया है। यह जिनालय भट्टारक कालीन सुरक्षित है। मंदिर जी में पंच-धातु की अत्यन्त आकर्षक प्रतिमा विराजमान है। यहाँ पर करीब 500 से 1000 वर्ष प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपि में 3000 ग्रन्थ है। कुछ ग्रन्थ फीट लंबे ताड़ पत्र पर लिखे हुए है। 1000 वर्ष प्राचीन कानड़ एवं उडिया भाषा में आचार्यो द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ सुरक्षित है। आचार्य निग्रन्थ सकलकीर्ति भट्टारक जी द्वारा सुरक्षित ग्रन्थ एवं अन्य 3 मंदिर भी है। पांच-पांच शिखरवाले मंदिर ईडर में है। ईडर गढ़ पर तीन शिखर वाला 12वी सदी का मंदिर भी आदिनाथ का है। यहाँ पर कई विद्वानों एवं आचार्यों ने चातुर्मास भी किये है इस बंगले में गरमी में भी ठंडक का अनुभव होता है श्रीमद् राजचंद्रजी यहां शास्त्र भंडार में स्वाध्याय करने आते थे। इस भंडार में प्रति वर्ष श्रुत पंचमी के दिन शास्त्रों की सफाई आलमारियों की सफाई एवं उनका पूजन किया जाता है। श्रीमद् जी के अनुयायी और विदेशी भी स्वाध्याय प्रेमी, दर्शन करने आते है। भट्टारक कालीन पालकियाँ अभी भी सुरक्षित हैं। श्री संभवनाथ पार्श्वनाथ ट्रस्ट द्वारा शास्त्र भण्डारों की सेवा होती रहती है। श्री पार्श्वनाथ मंदिर चौबीसी जिनालय है 10 वर्ष पहले 500 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से आठ वेदियाँ जो दबी हुई थी उसे निकालकर पूरा चौबीसी जिनालय बनवाया गया। कृपया दर्शन हेतु पधारें ऐसी मेरी भावना है।

ईडर के अलावा अंकलेश्वर जी सूरत के पास में वहां पर आचार्य श्री भूतबलीजी एवं आचार्य श्री पुष्पदंतजी ने षटखंडागम ग्रंथ की रचना अंकलेश्वर में की थी, उस क्षेत्र का विकास अत्यन्त आवश्यक है। यहाँ यात्रियों को आकर्षित करने हेतु सुविधाएँ है। प्रचार प्रसार की अत्यन्त आवश्यक है।

दिगंबर जैन तीर्थ चंवलेश्वर

शान्तिलाल जैन (जांगड़ा), उदयपुर

चंवलेश्वर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र राजस्थान के भीलवाड़ा जिले की मांडलगढ तहसील के चैनपुरा गांव में स्थित है। चंवलेश्वर से भीलवाड़ा की दूरी 60 कि.मी. है। भीलवाड़ा जिले के एक और दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बिजौलिया से इसकी दूरी 60 कि.मी. और पूर्व में दिगम्बर जैनों का प्रमुख केंद्र रहे मांडलगढ़ कस्बे से इसकी दूरी 45 कि.मी. है। चंवलेश्वर तीर्थ का मुख्य अर्थात मूल मंदिर बनास नदी के समीप अरावली पर्वत माला की समुद्र तल से 350 मीटर की ऊंची चोटी पर स्थित है। यहां तक जाने के लिए 250 सीढियां चढने के बाद आधा कि.मी. का मार्ग पार कर और 100 सीढियां चढनी पड़ती है। इस क्षेत्र का प्राकृतिक वातावरण मनोरम है। यह क्षेत्र पहाड़ी की चोटी अर्थात चूल पर है, अतः इसका नाम चूलेश्वर हुआ। 'चूलेश्वर' शब्द ही बाद में 'चंवलेश्वर' हो गया। दूसरी मान्यतानुसार यहां की मूलनायक प्रतिमा चंवला जैसे पाषाण की है, अतः क्षेत्र का नाम चंवलेश्वर है। इस तीर्थ के प्रति दिगम्बर जैनों की विशेष आस्था के कारण इस समुदाय के लोगों में एक भजन लोकप्रिय है, जिसकी प्रारम्भिक पंक्तियां इस प्रकार हैं –

पारस प्यारा लागो, चंवलेश्वर प्यारा लागो।
थांकी बांकड़ली झांड़ियां में रस्तो भूल्यो म्हारा पारसजी।
मैं रस्तो कइयां पावांला।

क्षेत्र पर विद्यमान मंदिर, प्रतिमाएं इत्यादि – मुख्य मंदिर में मूलनायक पार्श्वनाथ की प्रतिमा (चित्र 1) अत्यंत प्राचीन है। इसकी ऊंचाई लगभग 31 ईंच है। इस प्रतिमा की चरण चौकी पर दोनों ओर नीचे की ओर एक–एक सिंह और ऊपर की ओर एक–एक हिरण को बैठे हुए दर्शाया गया है। इस तरह के अंकन से इस प्रतिमा की प्राचीनता की जानकारी होती है। दोनों ओर बैठे हुए एक–एक सिंह और एक–एक हिरण के अंकन से मिलते–जुलते अंकन से युक्त कुछ प्राचीन जिन प्रतिमाएं कुछ अन्य दिगंबर जैन मंदिरों में भी विद्यमान हैं। मूलनायक प्रतिमा के दायीं और श्याम पाषाण की चौबीसी और बायीं ओर मटमेले पीले पाषाण की चौबीसी विराजित है (चित्र 2)। ये दोनों चोबीसियां पाषाण पर सर्वतोभद्र रूप में हैं। श्याम पाषाण की चौबीसी (चित्र 3) के अन्तर्गत ऊपर नीचे की पंक्ति में मध्य की तीर्थंकर प्रतिमाएं पद्मासन हैं और इनके दोनों ओर की प्रतिमाएं खड्गासन नग्न स्वरूप में हैं। मूलनायक के बायीं ओर जो चौबीसी है उसमें मध्य की दोनों पंक्तियों में तीर्थंकर प्रतिमाओं एवं इनके दोनों ओर लघु स्वरूप की प्रतिमाओं का अंकन पद्मासन स्वरूप का है।

मुख्य मंदिर स्थल लगभग 20 फुट लंबा एवं 16 फुट चौड़ा है। इसके गर्भगृह के द्वार के सिरदल पर तीन तीर्थंकर प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। मध्य की प्रतिमा पद्मासन है और इसके दोनों और की प्रतिमाएं खड्गासन नग्न स्वरूप (चित्र 4) की हैं। पहाड़ी के ठीक ऊपर दायीं ओर मुख्य मंदिर के पीछे छतरीनुमा स्थान है। इसमें लगभग पांच फुट ऊंचा लेख रहित और प्राचीन स्तूप विद्यमान है। यह सर्वतोभद्र प्रतिमा के रूप में है। यद्य इसका नामकरण सहस्रकूट जिनालय कर दिया है परंतु यह एक सौ साठ तीर्थंकर प्रतिमाओं से युक्त स्तूप (चित्र 5) है। इसमें चारों दिशा की ओर ऊपर से नीचे की ओर जो चार–चार तीर्थंकर प्रतिमाएं हैं जिनमें से ऊपर से नीचे की ओर की तृतीय पंक्ति की प्रतिमाएं खड्गासन नग्न मुद्रा में हैं। स्तूप की अन्य प्रतिमाएं पद्मासन मुद्रा में हैं। जैन मान्यतानुसार ढाई द्वीप सम्बन्धी पांच विदेह क्षेत्रों की अपेक्षा विदेह क्षेत्र में कुल एक सौ साठ (160 = 32X5) जनपद होते हैं। इन सभी जनपदों में एक साथ तीर्थंकरों का सद्भाव होने पर कुल 160 तीर्थंकर होते हैं। इसी मान्यतानुसार 160 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से युक्त इस स्तूप का निर्माण हुआ है।

चंवलेश्वर में मुख्य मंदिर के सामने की ओर एक स्थान पर स्तूपाकार पुरातन निर्माण है। इसके अंतर्गत भट्टारकों के चरण चिन्ह हैं। यह दिगम्बर जैन परंपरा के भट्टारकों की निषीधिका है। स्तूप, उसके साथ चरण चिन्ह और कहीं–कहीं उनके साथ लेख के उत्कीर्णन से युक्त निषीधिकाओं का निर्माण दिगंबर परंपरा के कई तीर्थों एवं मंदिर परिसरों में पाया जाता है। मुख्य मंदिर के सामने की ओर भगवान पार्श्वनाथ की लगभग 5 फुट ऊंची एक प्रतिमा विराजित है। आचार्य श्री विरागसागरजी एवं आचार्य श्री विशदसागरजी के ससंघ सान्निध्य में चंवलेश्वर तीर्थ पर मार्च 2011 में भव्य पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ। इसके अंतर्गत चंवलेश्वर की पहाड़ी के नीचे सीढ़ियों के मार्ग के प्रारम्भ में दायीं ओर नव निर्मित पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय एवं क्षेत्र की धर्मशाला परिसर में नव निर्मित जिनालय इत्यादि में जिनबिंबों की प्रतिष्ठाएं संपन्न हुई। पहाड़ी के नीचे सीढ़ियों के मार्ग के प्रारम्भ में पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय में विराजित

मूलनायक प्रतिमा पार्श्वनाथ भगवान की है। दिगम्बर स्वरूप की यह प्राचीन प्रतिमा, समीप में स्थित रहे एवं जीर्ण–शीर्ण हो चुके, नाटी काकी नाम के मन्दिर से लाकर यहां विराजित करवायी गई है (चित्र 6)। पहाड़ी के ऊपर ही मध्य भाग में एक जलाशय है जिसे तारा बावड़ी कहा जाता है। इस बावड़ी में वर्ष पर्यंत पानी भरा रहता है। इसी के पानी से भगवान का अभिषेक होता है। क्षेत्र पर यात्रियों के लिए पीने आदि के पानी की व्यवस्था हेतु कमेटी द्वारा ट्यूबवेल खुदवाये गये हैं।

क्षेत्र से सम्बद्ध जनश्रुति एवं इतिहास – एक जनश्रुति के अनुसार पूर्वकाल में इस क्षेत्र के समीप दरीबा नाम के नगर में सेठ श्यामा शाह के पुत्र नथमल शाह रहते थे। उनकी गाय प्रतिदिन जंगल में चरने जाती थी और वापस लौटने पर दूध नहीं देती थी। इसके कारण की खोजबीन करने पर एक दिन देखा गया कि गाय पहाड़ के उत्तुंग शिखर पर चढ़कर वहां एक स्थान पर अपना दूध झरा रही थी। दूसरे दिन सेठजी को स्वप्न आया कि गाय जहां दूध झराती है वहां भगवान की बहुत ही मनोज्ञ प्रतिमा भूगर्भ में विद्यमान है। सेठजी ने स्वप्न में निर्दिष्ट स्थान पर जाकर वहां की मिट्टी हटवाई तो भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रकट हुई। उन्होंने उस स्थान पर शिखरबंद मन्दिर बनवाकर वैशाख शुक्ला 10 विक्रम संवत् 1007 को प्रतिमा की पंचकल्याणक पूर्वक प्रतिष्ठा करवा दी।[1] एक अन्य विवरण में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा की तिथि वैशाख शुक्ला 3 विक्रम संवत् 1272 बतलायी गई है। पहाड़ी के नीचे पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय की मूलनायक प्रतिमा के बारे में कहा जाता है कि सेठ नथमल जी ने एक मंदिर का निर्माण अपनी काकी अर्थात चाची (सेठ हमीरमल की पत्नि) के दर्शनार्थ करवाया था। इस प्रतिमा को, जहां यह पूर्व में विराजित थी, वहां उसे मार्ग शुक्ला 5 विक्रम संवत् 1279 में प्रतिष्ठापित करवाया। उक्त जनश्रुति के अनुसार इस क्षेत्र पर स्थित मुख्य मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सेठ नथमल शाह के द्वारा संवत् 1007 अथवा संवत् 1272 में एवं पहाड़ी के नीचे नव निर्मित पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय में विराजित मूलनायक पार्श्वनाथ प्रतिमा की प्रारंभिक पंचकल्याण प्रतिष्ठा संवत् 1279 में करवायी गई। इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा से सम्बन्धित प्रशस्ति लेख आदि प्रतिमाओं पर होने की जानकारी प्राप्त नहीं होती है।

भीलवाड़ा जिले में स्थित विभिन्न दिगंबर जैन तीर्थ एवं उनकी इस तीर्थ से संबद्धता – बिजौलिया तीर्थ भी भीलवाड़ा जिले के अन्तर्गत है एवं यह भी प्रमुख दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्रों में से है। बिजौलिया में श्रेष्ठी लोलार्क द्वारा चट्टानों पर उत्कीर्ण करवाये गये दो ऐतिहासिक अभिलेख हैं। एक अभिलेख जो प्रशस्ति रूप में है 13 फुट 3 इंच लंबा एवं 5 फुट 4 इंच चौड़ा है। संवत् 1226 के इस अभिलेख के रचयिता दिगम्बर जैन परम्परा के माथुर संघ के महामुनि गुणभद्र थे। इसके अनुसार भगवान पार्श्वनाथ को, कमठ द्वारा उपसर्ग के उपरान्त, बिजौलिया में केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। श्रेष्ठी लोलार्क को स्वप्न में प्राप्त निर्देशानुसार मंदिर स्थल पर खुदाई करने पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा प्राप्त हुई। उन्होंने वहां मंदिर बनवाकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवायी और इस शिलालेख को उत्कीर्ण करवाया।[2] लोलार्क द्वारा उत्कीर्ण करवाया गया दूसरा अभिलेख 19 फुट 8 इंच लंबा एवं 8 फुट चौड़ा है। इसका नामकरण 'उत्तम शिखर पुराण' किया गया है। इसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जीवन चरित्र का विवरण है। ये दोनों अभिलेख चाहमान (चौहान) सोमेश्वर के राज्यकाल के हैं। इन शिलालेखों के अतिरिक्त यहां दो चतुरस्र स्तंभ हैं जो निषीधिकाएं हैं। मूलसंघ–बलात्कार गच्छ के भट्टारक धर्मचन्द्र का उल्लेख यहां के एक शिलालेख में आया है। भट्टारक शुभचन्द्र के शिष्य हेमकीर्ति की प्रशंसा संवत् 1465 के अभिलेख में की गई है। संवत् 1483 में उनकी परम्परा की आर्यिका आगमश्री की बिजौलिया में ही समाधि हुई। इसका उल्लेख यहां के निषीधिका अभिलेख में हुआ है। श्रेष्ठी लोलार्क को मंदिर स्थल पर खुदाई करने पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की जो प्रतिमा प्राप्त हुई वह अब यहां नहीं है। कहां है, यह ज्ञात नहीं है।

मध्यकाल में इस क्षेत्र में होते रहे आक्रमणों एवं यहां की परिस्थितियों आदि के बारे में कई बातें ज्ञात होती हैं। मांडलगढ़ के मूल निवासी रहे जैन साहित्य के विद्वान पं. आशाधर के बारे में ज्ञात होता है कि वे मेवाड़ पर बादशाह शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमणों से त्रस्त होकर वि.सं. 1250 में मालवा की राजधानी धारा में परिवार सहित जाकर बस गये थे।[3] मांडलगढ किले पर आज भी एक पुरातन दिगंबर जैन मंदिर विद्यमान है। इस मंदिर की मूलनायक प्रतिमा के दायीं ओर की प्रतिमा का प्रशस्ति लेख संवत् 1195 का है। इससे ज्ञात होता है कि यहां का मूल मंदिर पं. आशाधरजी द्वारा मालवा की राजधानी धारा नगरी में यहां से जाकर बसने से पूर्व यहां विद्यमान था। इस मंदिर की एक धातु प्रतिमा संवत् 1490 की है। यह प्रतिमा भट्टारक सकलकीर्ति के समय उनके अथवा उनके शिष्य भुवनकीर्ति द्वारा प्रतिष्ठित है।[4]

मांडलगढ़ किले पर स्थित दिगंबर जैन मंदिर और चंवलेश्वर अतिशय क्षेत्र के मंदिर में कुछ समानताएं हैं। दोनों ही जिनालय पहाड़ी पर हैं और दोनों ही जिनालयों में सर्वतोभद्र रूप की प्राचीन प्रतिमाएं हैं। चंवलेश्वर जिनालय के गर्भगृह में विराजित प्राचीन प्रतिमाएं चौबीसी के रूप में हैं और मांडलगढ किले के मंदिर में लगभग इन चौबीसी के नाप की ही दो प्राचीन नंदीश्वर जिनालय की सर्वतोभद्र प्रतिमाएं विराजित हैं। मेवाड़ पर बादशाह शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमण एवं उसके बाद कई प्रदेशों के मुसलमान शासक धर्मान्ध, क्रूर एवं निर्दयी हुए। इस कारण दिगम्बर जैन परम्परा में साधुओं का नग्न रहकर विचरण करना कठिन हो गया था। मूलसंघ–बलात्कार गच्छ से संबद्ध बसंतकीर्ति संवत् 1264 में भट्टारक पट्ट पर आरूढ हुए। दिगंबर परंपरा में मुनियों द्वारा वस्त्र धारण करने की प्रथा को, उत्तर भारत की पट्टावलियों में अपवाद मार्ग के रूप में, उन्होंने मंडपदुर्ग (मांडलगढ दुर्ग) में प्रारंभ किया।[5]

भीलवाड़ा जिले मे स्थित जहाजपुर कस्बे में पुरातन समय में अनेक दिगंबर जैन मंदिर थे। काल के बदलते चक्र के अंतर्गत मूर्तिभंजकों एवं विधर्मी आतताइयों द्वारा किये जाने वाले आक्रमणों के कारण धर्मानुरागी श्रावकों ने अनेक जिन प्रतिमाओं को भूगर्भ में छिपा दिया। ये प्रतिमाएं समय–समय पर प्रकट होती रहीं। सन् 1984, 1990, 1994, 1995, 1997, 2010, 2012 में जहाजपुर कस्बे में विभिन्न स्थानो पर की गई खुदाई में जिन प्रतिमाएं, जैन स्तंभ आदि प्राप्त हुए। सन् 2013 में महावीर जयंती के अवसर पर जहाजपुर कस्बे में एक मकान की नींव की खुदाई में 15 जैन मूर्तियां प्राप्त हुई। आर्यिका श्री स्वस्तिभूषणजी माताजी के प्रयासों से सभी मूर्तियां सरकार द्वारा दिगंबर जैन समाज को सुपुर्द की गई। सबसे विशाल प्रतिमा सवा चार फुट ऊंचाई की भगवान मुनिसुव्रतनाथ की होने से यहां के तीर्थ का नामकरण श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, जहाजपुर किया गया। आर्यिकाश्री के निर्देशानुसार यहां भव्य मंदिर का निर्माण किया जा रहा है, इस कारण इस तीर्थ को स्वस्तिधाम भी कहा जाने लगा है।

चंवलेश्वर दिगंबर जैन परंपरा का अतिशय क्षेत्र है –

मुख्य मंदिर के गर्भगृह के द्वार के सिरदल पर खड्गासन नग्न स्वरूप की तीर्थंकर प्रतिमाओं के अंकन से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र के उद्भव काल से एवं यहां के मुख्य मंदिर एवं इसके गर्भगृह के निर्माण समय से ही यह क्षेत्र दिगम्बर जैन परम्परा का है। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में विराजित प्राचीन श्याम पाषाण की चौबीसी के अन्तर्गत और पहाड़ी पर 160 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से युक्त स्तूप पर खड़गासन नग्न स्वरूप की तीर्थंकर प्रतिमाओं का अंकन भी दिगम्बर जैन परम्परा के अनुसार है। यहां पहाड़ी पर दिगम्बर जैन परंपरा के भट्टारकों की निषीधिका का निर्माण विद्यमान है। चंवलेश्वर के समीपस्थ अन्य दिगंबर जैन तीर्थों की परंपराओं के साथ इस तीर्थ की परंपरा, यहां विराजित प्रतिमाओं आदि के अध्ययन से भी यह तीर्थ दिगंबर जैन परंपरा का सिद्ध होता है।

इस अतिशय क्षेत्र से संबंधित न्यायिक वाद – इस अतिशय क्षेत्र की प्रबंध कमेटी श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र बागूदार के नाम से है। इस कमेटी का सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अंतर्गत रजिस्ट्रार/ जोइन्ट स्टोक कंपनीज, जयपुर से दिनांक 27.01.1956 को पंजीकरण करवाया गया। कमेटी का पंजीकरण राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम के प्रावधानान्तर्गत कराने हेतु कमेटी द्वारा सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग कार्यालय में विधिवत प्रपत्र भरकर आवेदन किया गया। कार्यालय सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग उदयपुर द्वारा अंतर्गत धारा 18 (2) राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम के तहत सार्वजनिक नोटिस जारी किया गया। इस पर श्वेतांबर समाज की ओर से आपत्ति प्रस्तुत की गई। इस आपत्ति को संबंधित विभाग ने खारिज कर श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र कमेटी बागूदार को सार्वजनिक प्रन्यास घोषित किया एवं पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी करने का आदेश दिया। इस आ के विरुद्ध की गई अपील को दिनांक 04.10.1978 को खारिज किया गया।

अतिशय क्षेत्र की मूलनायक प्रतिमा जहां विराजित है, उसके गर्भगृह के चेनल गेट दिगंबर जैन समाज द्वारा सन् 1970–71 में लगाये गये। उस समय यह देखा गया कि दिगंबर जैन समाज की ओर से जो चेनल गेट लगाये जाते श्वेतांबर समाज के कुछ असामाजिक तत्व रात्रि में चुपके से उसे तोड़ जाते। दिगंबर एवं श्वेतांबर जैन समाज के मध्य होने वाले इस तरह के विवादों के कारण समय–समय पर संबंधित प्रकरण न्यायालय मुंन्सिफ/ सिविल मजिस्ट्रेट–मांडलगढ, न्यायायिक मजिस्ट्रेट–भीलवाड़ा, राजस्थान उच्च न्यायालय आदि में चलता रहा। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा मेले के अवसर पर श्वेतांबर जैनों की ओर से राइट टू पूजा का प्रश्न खड़ा करने पर यह

चित्र 1

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ के मुख्य मंदिर में विराजित मूलनायक प्रतिमा

निर्देश दिया गया था कि श्वेतांबर समाज के व्यक्ति पोषवदी नवमी को प्रातः 9 बजे से सांय 6 बजे तक एवं पोष वदी दशम को प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक पूजा कर सकेंगे। राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 08.04.1983 को आधार मानकर श्वेतांबर समाज ने अपनी ओर से एक दावा न्यायालय में और प्रस्तुत किया था। एक न्यायालय का निर्णय यह भी था कि चंवलेश्वर तीर्थ दिगंबर जैन तीर्थ है। श्वेतांबर जैन समाज द्वारा की गई अपील के कारण यह प्रकरण अब भी न्यायालय में चल रहा है।

संदर्भ सूचीः–

1. पं. बलभद्र जैन : भारत के दिगंबर जैन तीर्थ, चतुर्थ भाग, प्रकाशक भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुंबई, 1978 ई. पृष्ठ 86।
2. उपाध्याय (वर्तमान में आचार्य) कनकनंदी : पार्श्वनाथ का तपोसर्ग कैवल्यधाम बिजौलिया, प्रका. धर्म दर्शन विज्ञान शोध प्रकाशन बड़ौत (उ. प्र.), 1994 ई. के पृश्ठ 71 से 93 में अभिलेख के मूलपाठ के कुछ अंशों और उसके हिंदी अनुवाद को प्रस्तुत किया गया है।
3. डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य : तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, चतुर्थ खण्ड, प्रका. आ. शान्तिसागर छाणी ग्रंथमाला, बुढ़ाना (मुजफ्फरनगर), 1992 ई., पृष्ठ 41।
4. शांतिलाल जैन जांगड़ा : मांडलगढ़ के दिगंबर जैन मंदिर एवं इतिहास, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार, लखनऊ, मार्च 2016 अंक, पृष्ठ 14 से 16।
5. प्रो. विद्याधर जोहरापुरकर : भट्टारक संप्रदाय, प्रका. जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर, 1958 ई., पृष्ठ 93।

चित्र 2

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ के मुख्य मंदिर के गर्भगृह में विराजित प्रतिमाओं का दृश्य

चित्र 3

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ के मुख्य मंदिर के गर्भगृह में श्याम पाषाण की चौबीसी प्रतिमा

चित्र 4

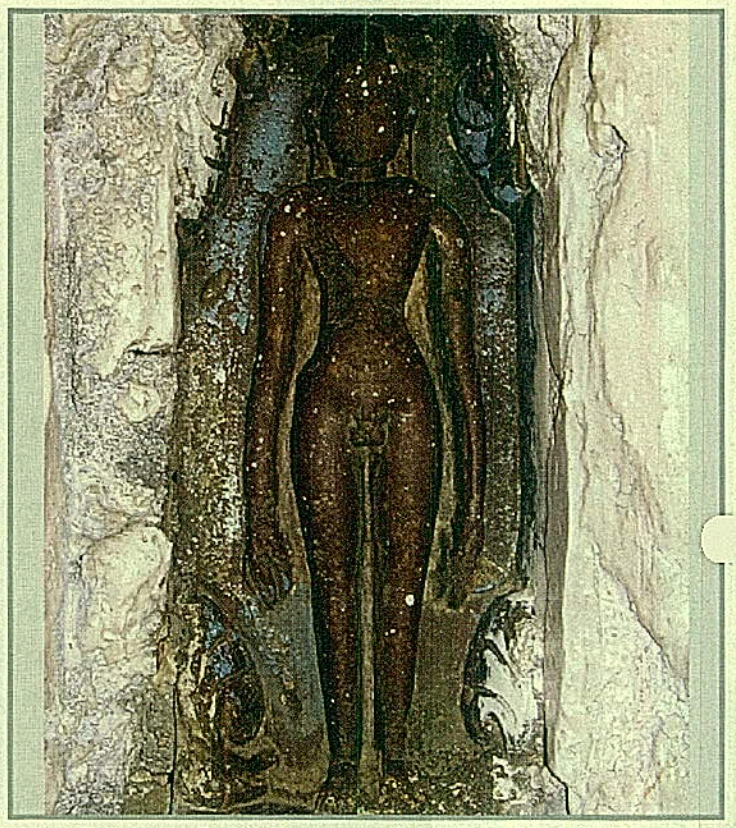

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ के मुख्य मंदिर के गर्भगृह के सिरदल पर सामने से दायीं ओर उत्कीर्ण खड्गासन नग्न तीर्थंकर प्रतिमा

चित्र 5

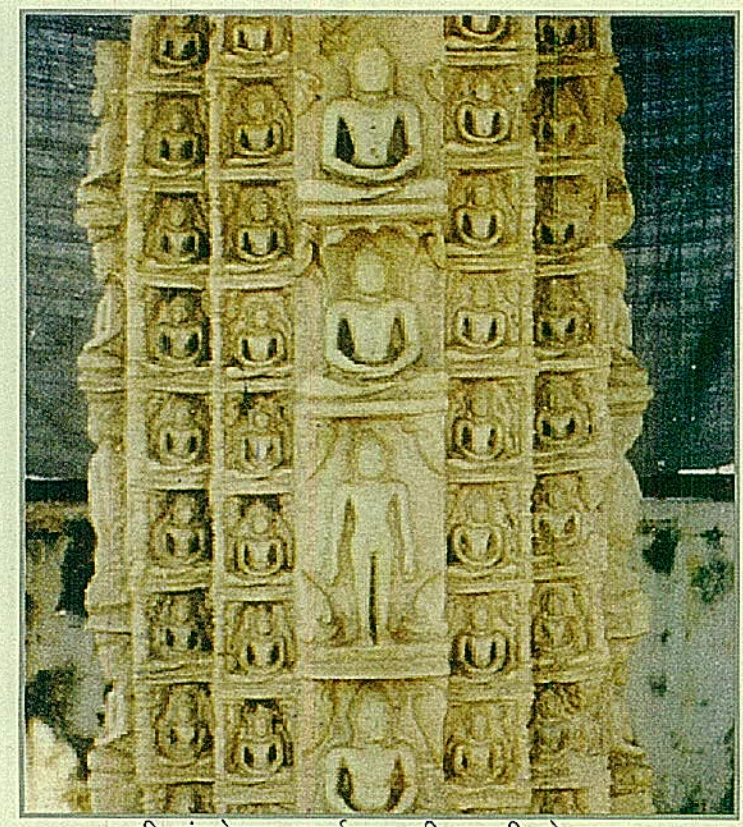

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ की पहाड़ी के ऊपर एक सौ साठ तीर्थंकर प्रतिमाओं से युक्त प्राचीन स्तूप

चित्र 6

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ की पहाड़ी के नीचे सीढ़ियों के मार्ग के प्रारम्भ में नव निर्मित पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय में विराजित मूलनायक पार्श्वनाथ प्रतिमा।

विमल-दर्शन
अंबाजोगाई-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मराठी के आद्यकवि श्री मुकुंदराज स्वामी ने इस नगरी को 'मनोहर अंबानगरी' नाम से गौरवान्वित किया। अंबाजोगाई शहर को ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक विरासत प्राप्त है। प्राचीन काल से यह नगर ''नगरं भूषणं भवं'' अर्थात समस्त विश्व में यह नगर भूषणावह है।

ऐतिहासिक साधनों से समृद्ध इस अंबानगरी में यादवकालीन और उसके पहले अनेक शिलालेख (शके १०६६-११५०) एवं हेमाडपंथी, स्थापत्य कला, प्राचीन वास्तुकला के अनेक मंदिर, स्थान है। इतिहास प्रसिद्ध ऐलोरा गुफाओं के समान यहाँ भी हजारों साल प्राचीन जैन, वैष्णव एवं शैव गुफाएँ हैं। जो नगर का वैभव वृद्धिगत कर रही है।

समस्त महाराष्ट्र के भक्तों का श्रद्धास्थान साढ़ेतीन शक्तिपीठ, सतगुणोंसे परिपूर्ण माता योगेश्वरी देवी का भव्य मंदिर यहाँ है। यह जोगाईदेवी कोकणस्थों की कुलदेवता और अंबाजोगाई वासियोंकी ग्रामदेवता है। इस नगरीको सिद्ध, संतभूमि के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व है। आद्यकवि श्री मुकुंदराज स्वामी के पहले नाथपंथी सिद्ध महंतों का वास्तव्य यहाँ था। मराठी साहित्य में आद्यकवि श्री मुकुंदराज स्वामी रचित 'विवेक सिंधु' इस ग्रंथ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी प्रकार संतकवि दासोपंत की यह कर्मभूमि है। उनकी ग्रंथसंपदा महान है। गीतापर ही उनके छद्दृ सटीक ग्रंथ हैं। गीतार्णव, पदार्णव यह उनके असामान्य प्रतिभा के साक्षी है।

संत रामदास को 'दासबोध ग्रंथ' लेखन की प्रेरणा श्री मुकुंदराज स्वामी के 'विवेक सिंधु' ग्रंथ से ही मिली थी। संत रामदास, संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ, चक्रधर स्वामी जैसे महान संत-महंतों के पदस्पर्श से अंबानगरी पावन हुई है। उसी प्रकार कृष्णदयार्णव, शिवकल्याण, नित्यानंद आदि संत कवियों की विरासत इस नगरीने बड़ी सफलता से संभाली है।

जैन शासक : राजा जैत्रपाल -

सिंघण राजा का सेनापती खोलश्वर ने इस नगर को प्रमुख क्षेत्र बनाया और इस नगरी का राजा जैत्रपाल जो जैन था। राजा के कार्यकाल में जिनशासन को प्रधान स्थान प्राप्त हुआ। उसी के नाम से तत्कालीन समय में अंबाजोगाई का नाम जयवंती नगर था। कहा जाता है कि, राजा जैत्रपाल को पारमार्थिक ज्ञान देने हेतु ही श्री मुकुंदराज स्वामी ने 'विवेक सिंधु' ग्रंथ का निर्माण किया।

खोलेश्वर मंदिर के पास उत्तुंग बुरुज को 'जैत्रपाल राजा की गढ़ी' कहा जाता है। यहाँ के प्राचीन शिलालेख तीर्थंकरों की मूर्तियाँ, मंदिर साथ मुर्तियों के भग्नावशेष से जिनशासन के वैभव एवं प्रभुत्व का ज्ञान होता है। आज भी दासोपंत समाधि के क्षेत्र में मल्लिकार्जून मंदिर के स्तंभों पर जैन शिल्प है। संकलेश्वर मंदिर (बारखांबी) शिल्पकला की अनोखी मिसाल है।

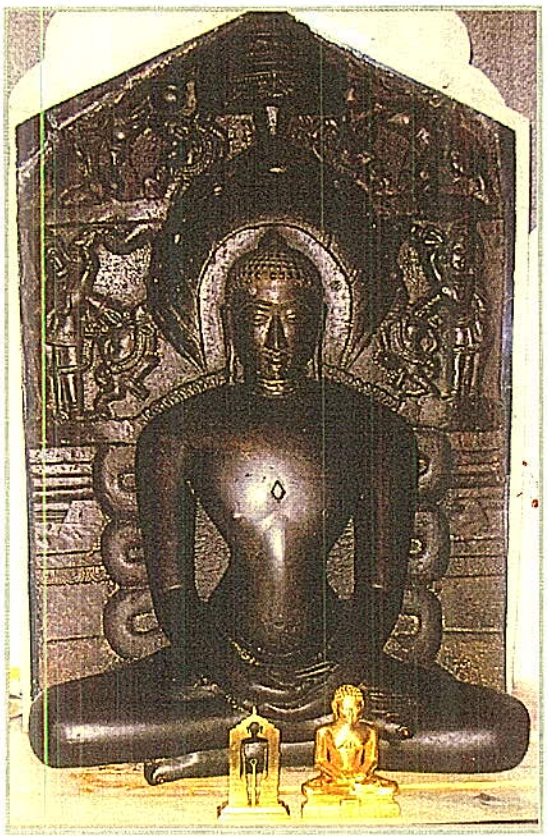

यहाँ के अनेक जैन शिल्पों की स्थापना जैन समाज ने श्री क्षेत्र नसईगढ़ में की है। योगेश्वरी मंदिर के वायव्य दिशा में जयवंती नदी में एक शिवगुफा है, उसे जोगाई का मायका, हाथीखाना या भूचरनाथ मंदिर भी कहते है। इन्हीं गुफाओं में चौबीस तीर्थंकरोंकी मूर्तिया भी है।

जैन गुफाएँ-

जयंवती नदी के किनारे हाथीखाना के शिवगुफाओं के पास जैन गुफाएँ हैं। जिसमें प्राचीन जिनशासन वैभव दिखाई देता है। इन गुफाओं में पूर्व दिशाओं की ओर दो सभामंडप एवं दक्षिण और उत्तर दिशा की ओर एक मंडप है। सभा मंडप के खुले मैदान में 'मानस्तंभ' है, जो हिंसा के दबाव में जीनेवाले समस्त विश्व को शांति का संदेश देता है। गुफाओं में प्रवेश करते ही सामने दो महान हाथी है, मानो वे पर्यटकों का स्वागत कर रहे हों।

'जिओ और जीने दो' का संदेश देने वाली भगवान महावीर की मूर्ति सभामंडप है। इस मूर्ति के दोनों ओर सेवातत्पर यक्षिणी भी है। द्वारपाल है। इन्हीं गुफाओं में पार्श्वनाथ, प्रथम तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ है। किन्तु भग्नावस्था में यह गुफाएँ मानो प्रकृति और मानव के आघातों को सहते हुए खामोश खड़ी हैं।

जैन, शैव और वैष्णव धर्म से संपन्न यह अंबाजोगाई शहर आज राजकीय तथा शैक्षणिक उन्नति के साथ जिला बनने का सपना देखने वाला प्रमुख केंद्र बन गया है। राजा जैत्रपाल के शासन काल में इस जयवंती नगर, निजाम शासन काल में मोमीनाबाद और आज के अंबाजोगाई शहर के इतिहास लेखन का आरंभ जैन संस्कृति से ही करना होगा। अंबाजोगाई पहले 'जैन नगरी' ही थी ऐसे अनेक मंदिर यहाँ है। जैसे भगवान विमलनाथ के अतिशय क्षेत्र के नजदीक महादेव मंदिर पर जैन मूर्तियाँ स्थापित हैं। मंदिर प्रवेश के पथरीली चौखट पर तीर्थंकर की प्रतिमा है।

विमलनाथ मंदिर -

अंबाजोगाई जैन धर्म का व्यापक क्षेत्र है और धार्मिक उत्सवों के कारण समाज को सम्मान का स्थान प्राप्त हुआ है। जहाँ जैन समाज के अधिक निवासी हैं वहाँ जैन समाज का 'श्री १००८ विमलनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र' है। मूलनायक १३ वें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ की सुंदर मूर्ति मंदिर में विराजित है। आज यह पश्चिमामुख होकर पूरब की ओर आध्यात्म की साक्ष दे रहा है। यह मंदिर १००० साल प्राचीन है। मंदिर की रचना हेमाडपंथी है। मंदिर में अन्य तीर्थंकरों की भी मूर्तियाँ है। किन्तु भगवान विमलनाथ की मूर्ति का दर्शन करने के बाद स्थापत्य शास्त्राज्ञों ने और पर्यटकों ने मूर्ति की प्रशंसा की है।

विकास -यात्रा-

सन १९८२-८३ में पू. श्री १०८ हेमसागर महाराजजी के आगमन

एवं प्रेरणा से मंदिर के सभामंडप का नूतनीकरण पूर्ण हुआ। इस 'महावीर सभागृह' में धार्मिक सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया जाता है।

श्री आबासाहेब देशमाने और उनके पुत्रों ने नाममात्र दाम में अपना पुराना मकान मंदिर के लिए दे दिया। सन १९८४ में प.पू. आचार्य श्री १०८ आर्यनंदी मुनि महाराज विहार करते हुए अंबाजोगाई में पधारे उस समय मंगल कार्यालय और छात्रावास का सपना पूर्ण होने का शुभाशीष उन्होंने दिया। उस शुभाशीष से समाज का आत्मविश्वास बढ़ गया।

आचार्य श्री १०८ विद्यासागर महाराज जी के दो शिष्य श्री १०८ चिन्मयसागर महाराज जी और श्री १०८ अक्षयसागर जी महाराज के आगमन से यह क्षेत्र पावन हुआ। उनके संपर्क में श्रावकों में धर्म, शुद्ध आचरण के भाव जागृत हो गये। परिणाम स्वरूप धार्मिक उत्सव और युवक-युवतियों में नवधा भक्ति के प्रति श्रद्धा, दानवृत्ति जागृत हो गई। जैन समाज के प्रति लोगों की यह भावना समझकर महाराज ने यह स्वीकार किया कि, ''यह अतिशय क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ अतिशयों से युक्त श्री १००८ विमलनाथ भगवान विराजते हैं।''

अपना अतिशय क्षेत्र है यह ज्ञात होने के पश्चात समाज के खुशी का ठिकाना ना रहा । लेकिन समाज चिंतित भी हुआ कि इस जिम्मेदारी को उठा पायेंगे या नहीं? किन्तु भगवान विमलनाथ की कृपा और चिन्मयसागर महाराजजी की प्रेरणा से समाज में शक्ति जागृत हो गयी। परिणाम स्वरूप विकासकार्य को गति प्राप्त हो गई।

३१ दिसम्बर १९९६ से प्रतिवर्ष पौष शुद्ध दशमी के दिन मेला (यात्रा) प्रारंभ हुआ। मुनि चिन्मयसागरजी और मुनि श्री अक्षयसागरजी महाराज सान्निध्य में पहला मेला संपन्न हुआ। उसके बाद आचार्य पद्मनंदी, गुणनंदी इनके सान्निध्य का लाभ समाज को मिला।

अनेक संतों का संपर्क और शुभाशीष से अतिशय क्षेत्र के विकास में समाज के श्रावकों का आर्थिक योगदान महत्त्वपूर्ण साबित हुआ। सभी के सहयोग से मंगलकार्य का कार्य पूर्ण हो गया। अब समाज की धर्मशाला हो यह मानस है।

विकास की एक-एक सीढ़ी में नई कल्पनाएँ, नई इच्छाएँ प्रकट होने लगी। उसमें मंदिर कलश के साथ ग्रेनाईट, मार्बल का भी कार्य संपन्न हो गया।

कलश निर्माण में पाँच लाख रुपयों की आवश्यकता थी। आर्थिक चिंता तो थी, लेकिन समाज की इच्छाशक्ति और दानशूरों के दातृत्त्व से यह कार्य भी पूर्ण हो गया।

समाज बांधवों के संघटन, विकास का निश्चय तथा श्रावकों के अथक परिश्रम से आज ऐतिहासिक अंबाजोगाई में ''श्री १००८ विमलनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र'' सम्मानित है।

सन्मति सेवा दल-

श्री १०८ चिन्मयसागर महाराजजी ने अंबाजोगाई के युवा-शक्ति को पहचानकर 'सन्माति सेवा दल' की स्थापना की और युवाशक्ति ने महाराज के विश्वास को सार्थ सिद्ध किया। 'सन्मति सेवा दल' महाराष्ट्र प्रांत का पहला आधिवेशन अंबाजोगाई में संपन्न हुआ। युवा पींढ़ी ने युवकों से ही निधी संकलन से अंबाजोगाई परली पथ पर ४५००० रुपये खर्च करके सुंदर कमान का निर्माण किया। अनेक श्रावक श्री १००८ विमलनाथ भगवान के दर्शन से प्रसन्न होते हैं। भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर युवकों ने सभी पाठशाला के छात्रों के साथ अहिंसा फेरी का आयोजन किया।

युवकों और जैन समाज के आर्थिक स्थैर्य हेतु अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष और सन्मति सेवा दल के संयुक्त तत्त्वावधान में '' सन्मति नागरी पत संस्था' की स्थापना करके शहर में समाज का सिर उँचा किया । आज इस पत संस्था ने चार से पाच करोड की निवेश पूँजी जमा की, इसलिए नगरवासी बड़े विश्वास के साथ आपना पैसा अमानत के तौर पर पत संस्था में रखते हैं। आर्थिक सहायता के कारण उद्योग और रोजगार की उपलब्धि हो गयी।

सन्मति सेवा दल के युवकों के प्रयास और नगराध्यक्ष की सहायता से नगरपालिका के प्रांगण में 'अहिंसा स्तंभ' का निर्माण किया गया। यह स्तंभ जैन समाज की एकता का दर्शन कराता है।

श्री भगवान विमलनाथ का अतिशय क्षेत्र-

महाराष्ट्र के अंबाजोगाइ शहर में भगवान विमलनाथ मंदिर का एकमात्र अतिशय क्षेत्र है। श्री भगवान विमलनाथ की यह मूर्ति चौथे शतक की सुंदर मूर्ति है। जिसके दर्शन से मन में अध्यात्मिक भाव जागृत होते हैं। इस मूर्ति के प्रत्यक्ष दर्शन से स्थापत्यकार, इतिहासकार, यात्री, दर्शनार्थी अचंभित एवं आनंदित हो जाते हैं।

मन में विशुद्ध-विमल भाव जागृत करनेवाली इस मूर्ति के मुख प्रात:काल 'स्मितहास्य' अपराह्न 'गंभीर -भाव' और संध्या-समय फिर स 'स्मित हास्य' की अनुभूति होती है। भगवान के विश्वकल्याणकारी भावनाओं की अनुभूति में प्रेवश करते ही मन के विकार धीरे-धीरे कम होते ही 'निस्सही-निस्सही' अर्थात आत्मा के मूल अपरिग्रह वृत्ति का नाश होता है, वीतरागी भगवान के दर्शन से मोक्षप्राप्ति की अनुभूति होती है।

इस मूर्ति के संबंध में एक किवदंती प्रसिद्ध है। तत्कालीन शासकों के कार्यकाल में तत्कालीन राजाओं के नाम से यह स्थान मशहूर था। जैसे सिंघण यादवों का सेनापति खोलेश्वर का यह ठिकाना था। उसी प्रकार ब्रिटीश, निजामों के शासन काल में लष्करों का ठिकाना था। इन स्थानों को यहाँ के बुजुर्ग आज भी दिखाते है।

किवदंती के अनुसार हैदराबाद के निजाम शासन काल में 'गोलकोंडा लान्सर' नामक लष्कर का ठिकाना था। इसका अधिकारी अपने निवासस्थान के पास छोटीसी उँचाई पर पैर रखकर घोडे पर बैठकर जाता था कहते है इसी के नीचे भूमि में प्रतिमा विराजमान थी। आधिकारी के स्वप्न में मूर्ति ने अधिकारी को आदेश दिया, ''मुझे जैन बांधवों के हाथों सौप दो।'' इस दृष्टान्त के बाद अधिकारी ने जमीन से मूर्ति निकालकर बड़ी श्रद्ध साथ जैन समाज के पास दे दी। उसके पश्चात विधिवत् यह मूर्ति प्रतिष्ठापित की गयी।

श्री क्षेत्र नसईगढ़-

अंबाजोगाई शहर से ४०० मीटर की दूरी पर नसईगढ़ है। यहाँ बाराखांबी (संकलेश्वर) क्षेत्र में महावीर स्वामी की खड़गासनस्थ मूर्ति की स्थापना की गयी है। यहाँ प.पू श्री देवेंद्रकीर्ति महाराजजी की समाधि और श्री नंदीश्वर एवं श्री क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ हैं। यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद वध द्वितीया के दिन जैन मंदिर से पालकी आती है। अभिषेक-पूजा के बाद पालकी वापस मंदिर में लाई जाती है।

नसईगढ़ क्षेत्र को प्रकृति का वरदान मिला है। यहाँ एक महान 'जिनालय' हो जहाँ समाज अध्यात्मिक चिंतन कर सके यह मानस ''साधना-कक्ष'' के निर्माण से पूर्ण हुआ है।

श्री क्षेत्र नसईगढ़ के आसपास का काम और सुशोभिकरण के लिए आर्थिक सहायता की अपेक्षा है।

निवेदक - 'श्री १००८ विमलनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र' अंबाजोगाई

ब्रह्म जिनदास विरचित भद्रबाहु रास
(श्रुत केवली भद्रबाहु दिव्यावदान के सन्दर्भ में)

- डॉ. प्रेमचन्द्र रांवका, जयपुर

अन्तिम 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् श्रुत-परम्परा का क्रम कई शतक तक चलता रहा। द्रव्य, गुण, पर्याय, तत्वज्ञान, कर्म सिद्धान्त एवं आचार संबंधी मौलिक मान्यताओं को परम्परा से प्राप्त कर स्मरण बनाये रखने की प्रथा अनवरत चलती रही। तिलोयपण्णत्ति के अनुसार जिस दिन भ. महावीर को निर्वाण प्राप्त हुआ उसी दिन उनके प्रधान शिष्य गौतम गणधर को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। उनके मुक्त (515 ई. पू.) होने पर सुधर्म स्वामी को केवल्य की प्राप्ति हुई। इनके मोक्ष (503 ई.पू.) जाने पर जम्बू स्वामी को केवलज्ञान हुआ और निर्वाण हुआ. ई. पू. 465 में। तीन अनुबद्ध केवली थे। इस प्रकार 62 वर्षों तक (12 12 38) तीनों केवलियाँ की ज्ञानज्योति प्रकाशित होती रही। तत्पश्चात् पांच श्रुत केवलो हुये- 14 वर्षों तक विष्णु ने, 16 वर्षों तक नन्दि मित्र ने, 22 वर्षीय तक अपराजित ने, 19 वर्षों तक गोवद्धन ने और 29 वर्षों तक भद्रबाहु ने (कुल 100 वर्ष) ज्ञान द्वीप को प्रज्वलित रखा।

इन्द्रभूमि गौतम गणधार ने भ. महावीर के उपदेशों को जिन 12 अंगों में निबद्ध किया था, उनमें 12 वां अंग दृष्टिवाद द्रव्यानुयोग से विशेष रुप से सम्बद्ध थी। इस अंग के अन्तिम ज्ञाता एक मात्र पंचमश्रुत केवली भद्र बाहु थे। अन्तिम सम्राट चन्द्रगुप्त इन्हीं भद्रबाहु से दीक्षित हुये थे (325 ई.पू.) 24 वें तीर्थंकर श्री वर्धमान महावीर के आठवें उत्ताधिकारी के रुप में गौरव प्राप्त अन्तिम श्रुत केवली भद्रबाहु मुनीश्वर के पावन चरित्र को महाकवि ब्रह्म जिनदास ने अपनी काव्य रचना का प्रतिपाद्य बनाया है।

15वीं श. के संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती व राजस्थानी भाषा साहित्य के उद्भट विद्वान् महाकवि ब्रह्म जिनदास संस्कृत के प्रसिद्ध महाकवि भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं शिष्य थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में 15 एवं हिन्दी भाषा में 70 लघु ब्रहद काव्यों के प्रणयन से मां भारती के भण्डार को समृद्ध किया। संस्कृति में काव्य-रचना के साथ लोकभाषा (नऊ गुर्जर) से इनका विशेष अनुराग था। ब्रह्म जिनदास ने सामान्य जन के बोध की दृष्टि से तत्कालीन हिन्दी भाषा में अधिक रचनाएं की। रामचरित्र, हरिवंशपुराण एवं जम्बूस्वामी चरित्र जैसे विशाल ग्रन्थों का प्रणयन संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में किया है। इनका सं. 1508 में रचित राम रास तुलसी कृत रामचरित मानस से 2.50 वर्वपूर्व हिन्दी भाषा-साहित्य का प्रसिद्ध महाकाव्य है; जिसका उल्लेख हिन्दी के विदेशी विद्वान फादर कामिल बुल्के ने अपने राम काव्य परम्परामें किया है। ब्र. जिनदास ने प्रथमानुयोग को अपनी रास संजक रचनाओं का प्रतिपाथ विषय बनाया है। गौतम स्वामी रास. भद्र बाहुरास, जम्बुस्वामीदास होणिक रास. जीवंधर रास, अनुयंत रास, धन्यकुमारास ऐसी ही रचनाएं है।

आलोच्य काव्य: भद्रबाहु रास

अंतिम पंचम श्रुतकेवली भद्रबाहु के जीवन चरित्र पर आधारित संस्कृत-हिन्दी में प्राय: विकीर्ण साहित्य मिलता है। प्रबंध रुप में रचित भद्रबाहु रास ब्रह्म जिनदास की अपनी मौलिक रचना है। कथानम्य वीर प्राय: साहित्य-रचना का सर्वत्र ही सम्बल होता है। यह रास अपभ्रंश भाषा-साहित्य के उत्तरकालीन गुजराती राजस्थानी छन्दों-वस्तु-दूहा, भास जसोधरती, जीनवाणी, रासनी भद्रबाहुजी, ठेलनी, रागों के 168 छन्दों में अनुस्यूत है। इन्हीं में भद्रबाहु का जीवनचारित्र आख्यायित हुआ है।

भद्रबाहु रास में ब्रनजिनदास ने सर्व प्रथम आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभु को नमस्कार कर सम्यक बुद्धि की प्राप्ति के लिये विद्या की अधिष्ठात्री मां सरस्वती और गणधर स्वामी को नमस्कार किया है। पश्चात अपने गुरु भट्टारक सकलकीर्ति के चरणों में प्रणाम कर इस ऐतिहासिक खण्ड काव्य की रचना भव्य जनों के हितार्थ प्रारम्भ करते हैं, जिसका कथासार इस प्रकार हो-

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के पुण्डवर्द्धन देश के कोटिनगर के सोम शर्मा पुरोहित की पत्नी सोमश्री की कुक्षि से भद्रबाहु का जन्म हुआ। चतुर्थश्रुतकेवली गोवर्द्धनाचार्य बिहार करते हुये मुनि संघ के साथ कोटि नगर आये। वहाँ उन्होंने एक उद्यान में एक साधक को एक पर एक गोटियां रखते देखा। बालक की इस प्रतिमा को देखकर उन्होंने यह धारणा बनाई कि यह बालक एक दिन तपोनिधि श्रूतकेवली होगा। इन्द्र सदृश भद्र (सौम्य-सुन्दर) होने से माता-पिता ने भद्रबाहु नाम रखा। गोवर्द्धनाचार्य उस बालक के पिता के पास गये और उनसे वह बालक अपने संरक्षण में ले लिया और उसे नाना शास्त्र विज्ञ बना दिया। माता-पिता के पास आकर भद्रबाहु ने उनके व लोगों के मिथ्यात्व को दूर किया। राज सभा में वादियों को परास्त कर बहुमान प्राप्त किया। माता-पिता की अनुभूति से गुरु गोवर्द्धनाचार्य के पास संयमी दीक्षा ले ली। महावैराग्य और ज्ञान में तीर्थ बुद्धि से उन्होंने अल्प समय में ही क्षुत का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। तदनन्तर अपनी आय शेष जानकर गोवर्द्धन स्वामी ने भद्रबाहु को मुनिसंघ का दायित्व संभला कर परलोक सिद्ध किया।

देश-विदेश में बिहार कर अपने धर्मोप्रदेश से सभी भव्य जनों का कल्याण करते हुये आचार्य भद्रबाहु संघसहित पधारे उज्जयिनी शिप्रा नहीं के तट पर उपवन में पधारे। राजा चन्द्रगुप्त उज्जयिनी में ही थे। एक रात्रि के पिछले प्रहर में चन्द्रगुप्त ने अनेक विचित्र स्वप्न देखे। उन स्वप्नों का फल जानने के लिये वे सपरिवार भद्रबाहु की शरण में पहुँचे। आ. भद्रबाहु ने उन स्वप्नों का फल अशुभ बताया और दुर्भिक्ष का संकेत बताया। चन्द्रगुप्त ने विरक्त हो राज-पाट छोड़ दिया और वे मुनि बन गये। आचार्य भद्रबाहु एक दिन उज्जयिनी (पाटली पुर) में आहार के लिये आये तो एक बालक ने उनसे कहा- जाओ, जाओ। आचार्य ने पूछा कितने दिन के लिये? बालक ने उत्तर दिया-

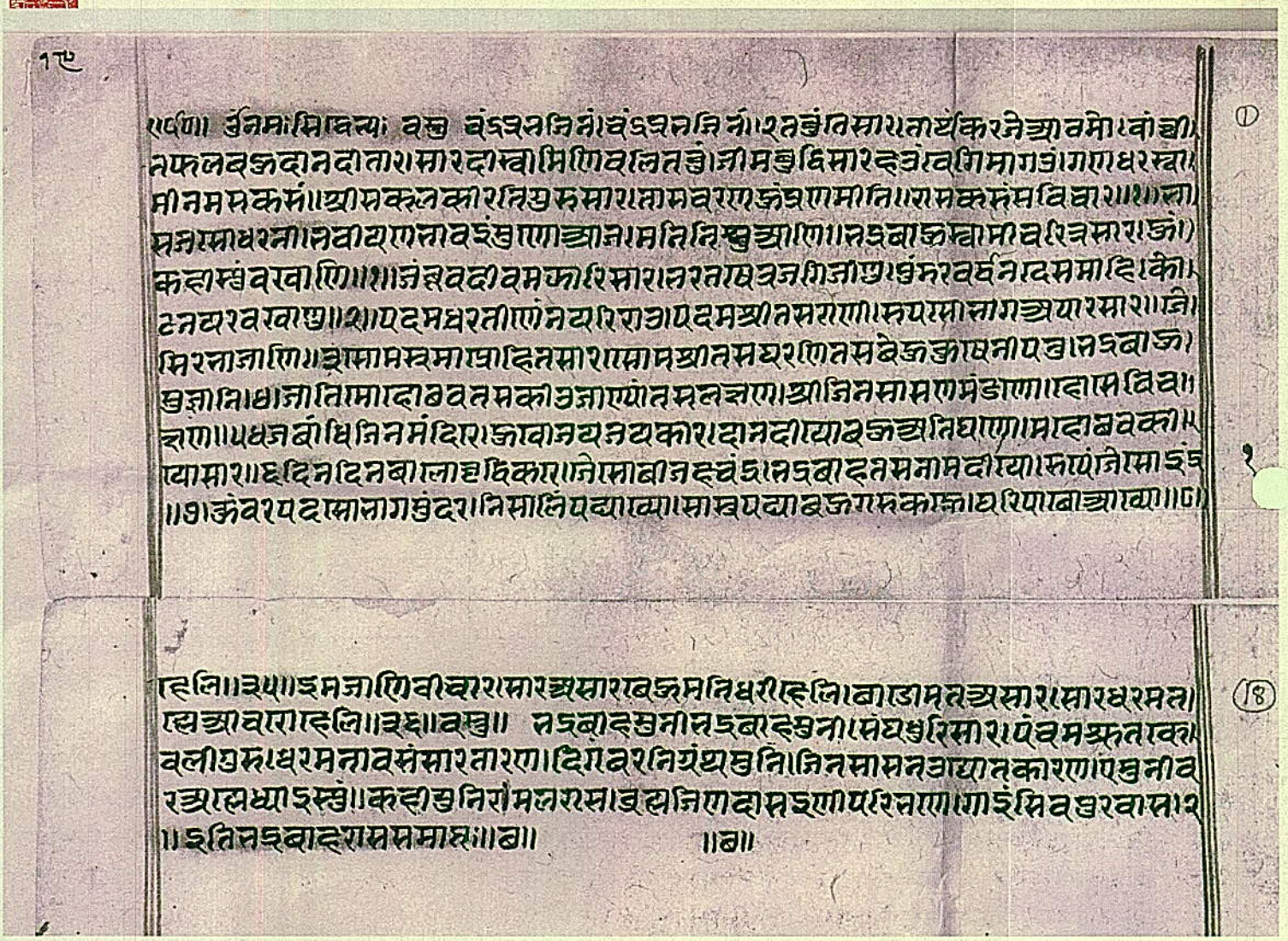

बारह वर्ष। भद्रबाहु निमित्त ज्ञानी थे। उन्होंने जाना कि यहां बारह वर्ष का अकाल पड़ने वाला है। यहां मुनि धर्म का निर्वाह कठिन हो जावेगा। इसलिये संघ को एकत्र कर दक्षिण देश की ओर चलने को कहा। सुनकर श्रावक गण दु:खी हुये। वे बोले-जैसे सुपुत्र के बिना कुल की शोभा नहीं होती वैसे ही सद् गुरु बिना। श्रावक समाज की शोभा नहीं। समस्त श्रावक धर्म की रक्षा में समर्थ है। परन्तु भद्रबाहु ने मुनि संघ का वहां रहना उचित नहीं समझा। रामल्य, स्थूलिभद्र और स्थूलाचार्य आदि अनेक मुनि वहीं रह गये। भद्रबाहु चन्द्रगुप्त आदि गये।

श्री भद्रबाहु संघ सहित बिहार करते हुए (श्रवणबेलगोला) के पास पहुंचे। अपनी अल्पायु जान भद्रबाहु ने सल्लेखना की और विशाखाचार्य के नेतृत्व में मुनि संघ को दक्षिण देश की ओर भेजा। मुनि चन्द्रगुप्त वहीं रह गये। वन में आगमानुकुल आहारचार्य न होने से चन्द्रगुप्त मुनि को उपवास करना पड़ा मुनि चन्द्रगुप्त को व्रती पवित्र हृदय जान कर वन देवताओंने नगर रचना की जिसमें विधि पूर्व आहार कराया गया। भद्रबाहु ने देह त्याग दिया।

उज्जयिनी में रहने वाले साधुओं को दुर्भिक्ष काल में आयी बाधाओं के कारण मुनि चर्या में दोष पैदा हो गये। भूख से पीड़ित लोगों उदर भरे मुनि के पेट को चीर अन्न निकालकर खा गये। एक दिन एक कुश काय निर्ग्रंथ साधु हाथ में भिक्षा पात्र लेकर रात्रि में श्रावक के घर गया। अन्धकार में नग्न को देखकर गर्भिणी श्राविका का भय के कारण गर्भपात हो गया। इस पर श्रावकों ने आकर साधुओं से प्रार्थना की समय बड़ा खराब है। जब तक स्थिति ठीक नहीं होती तब तक रात्रि में आहार लेकर नगर में निवास करें।

दुष्काल समाप्ति पर विशाखाचार्य ससंथ उत्तर की आये। भद्रबाहु की समाधि स्थल पर आये। श्रावकों के बिना आहार नहीं हुआ। चन्द्रगुप्त के विनय पर बन नगर में मुनि संघ का आहार हुआ तब विशाखाचार्य ने चन्द्रगुप्त के प्रभाव को मानकर प्रतिवन्दना की और बिहार कर सभी साधु वृन्द उज्जयिनी के उपवन में पहुंचे।

स्थूलाचार्य आदि मुनियों ने विशाखाचार्य की वन्दना की। विशाखाचार्य ने शिथिलाचरण के लिये उपालम्भ दिया। स्थूलाचार्य ने अपने संघस्थ साधुओं को पुन: मूल निर्ग्रंथ धर्म अपनाने के लिये कहा; कुछ ने स्वीकार किया। कुछ ने कुपित होकर स्थूलाचार्य पर आक्रमण दिया। स्थूलाचार्य मरकर व्यंतर हुआ और उपसर्ग किया मुनि मार्ग को छोड ने वालों शिथिलाचारी साधुओं ने क्षमा मांगी और मूल मुनि धर्म अंगीकार करने में

असमर्थ तो व्यक्त की। इस प्रकार जिन शासन में भेद हो गया। वीतराग धर्म छोड़े सराग धर्म को अपनाया। विक्रमादित्य राजा के बाद श्वेताम्बर सम्प्रदाय चलो।

भद्रबाहु स्वामी का दिव्यावदान:

325 ई.पू. होने वाले अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु को कुन्द-कुन्द स्वामी ने अपना गमक (प्रेरक) गुरु बताते हुये जयकार किया है। यह सर्वज्ञात है कि श्रुतकेवली भद्रबाहु अपने शिष्य मोर्य सम्राट चन्द्रगुप्त तथा एक बड़े भारी साधु संघ के साथ उत्तर से दक्षिणभारत की ओर गये थे। और श्रवणबेलगोला में उनका स्वर्गवास हुआ था। आ. कुन्द कुन्द को यह ज्ञात था कि दक्षिण भारत में जो जैन तत्व ज्ञान की परम्परा चालू है वह श्रुत केवली भद्रबाहु की देन है। अन्तिम श्रुतकेवली होने के नाते वे भगवान महावीर के द्वारा उपदिष्ट अंग ज्ञान के एक मात्र उत्तराधिकारी थे और उनके पश्चात जो अंग ज्ञान की प्रवृत्ति जारी रही उसके एक मात्र हेतु श्रुत केवली भद्रबाहु थे। इसलिये श्री कुन्दकुन्द स्वामी को जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह भी परम्परा से श्रुत केवली भद्रबाहु की ही देन थी। समयसार की गाथा में श्रुतकेवली भणित कहा गया है।

भद्रबाहु संहिता ग्रंथ भद्रबाहु के नाम पर लिखा गया प्रसिद्ध निमित्त शास्त्र है जो वीतरागी सर्वज्ञ भाषित निमित्तानुसार भद्रबाहु की रचना है। मगध में 12 वर्ष के दुष्काल को अपने निमित्तज्ञान से जानकर ये मुनि संघ को दक्षिण भारत की और ले जाकर मूल निर्ग्रंथ/जैन धर्म के परम संरक्षक बने। भद्रबाहु संहिता के प्रारम्भ में- ज्ञान-विज्ञान के समुद्र-तपस्वी कल्याण मूर्ति, रोग रहित, द्वादशांग श्रुत के वेत्ता, निर्ग्रंथ, महाकान्ति से विभूषित, शिष्य-प्रशिष्यों से युक्त और तत्ववेदियों में निपुण आ. भद्रबाहु को सिर से नमस्कार कर उनसे निमित्त शास्त्र के उपदेश देने की प्रार्थना की है। इस ग्रंथ की पुष्पिका वाक्यों से स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ सर्वज्ञ कथित वचनों के आधार पर भद्रबाहु स्वामी ने अपने दिवाज्ञान के बल से लिखा। उवसग्गहर स्तोत्र इन्हीं की रचना है। पाश्वनाथ की स्तुति की गई है।

मुनिचर्या एवं श्रुतांगों की सुरक्षा की दृष्टि से आ. भद्रबाहु ने 22 हजार साधु संघ ताथा नव दीक्षित सम्राट चन्द्रगुप्त (प्रथम) के साथ दक्षिण भारत की ओर बिहार किया। बिहार काल में उन्होंने विश्रामस्थलों चातुर्मास स्थलों तथा अन्तिम विश्राम स्थल कटवप्र (श्रवणबेलगोला-कर्नाटक) में स्वाध्याय, प्रवचनों एवं संबोधनों के माध्यम से कण्ठ परम्परा से प्राप्त श्रुतज्ञान की परम्परा को अनवरत बनाये रखा। संघस्थ साधुओं ने भी आगे बिहार काल में स्वाध्याय प्रवचन परम्परा को बनाये रखा।

महाकवि ब्रह्म जिनदास के शब्दों में-पंचम श्रुतकेवली गुरु भद्रबाहु संसार सागर से तारने वाले धर्मरुपी नौका थे। वे तत्ववेत्ता, निर्ग्रंथ मुनि-परम्परा के सच्चे संवाहक और जिन धर्म शासन के उद्योत के कारण स्वरुप थे। ऐसे निर्मल महामुनि का ध्यान कर मैंने इस निर्मल रास की रचना की है। जो शिवपुर (मोक्ष स्थली/ सिद्धालय) का मार्ग है।

भद्रबाहु मुनि भद्रबाहु मुनि, संघ धुरि सार।।
पंचम श्रुतकेवली गुरु, धरम नांव संसार तारण।
दिगंबर निर्ग्रंथ मुनि जिनशासन उद्योत कारण।।
ए मुनिवर अहमे ध्याइस्युं, कहीयुं निरमल रास।
ब्रहम जिणदास शणि परिमणे गाइं सिवपुर वास्ता।।

आदिनाथ जयंती के उपलक्ष में गोलाकोट महोत्सव २२ को

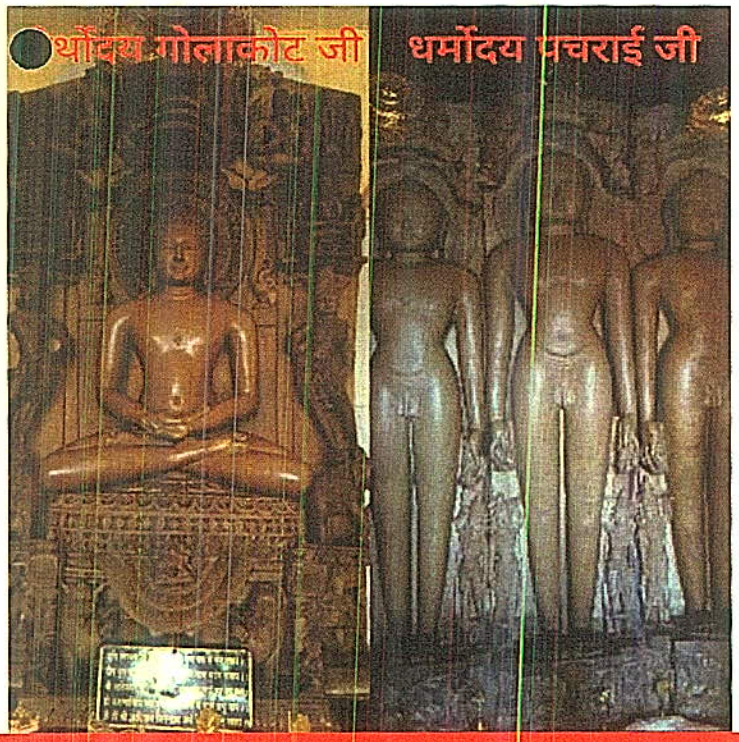

उज्जैन : जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री १००८ आदिनाथ भगवान के जयंती के उपलक्ष में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभाशीर्वाद से चमत्कारिक श्री बड़े बाबा गोलाकोट जैन तीर्थोदय में बड़े बाबा जी का महामस्तकाभिषेक के साथ विभिन्न मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन गोलाकोट महोत्सव २०१७ में किया जा रहा है। गोलाकोट तीर्थोदय समिति ने सकल जैन समाज से २२ मार्च २०१७ को आयोजित होने वाले महोत्सव में श्री गोलाकोट पधारने का आग्रह किया है।

ललितपुर के प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र

–डॉ. सुनील जैन 'संचय'

ललितपुर के प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र नवागढ़ में मिले हजारों वर्ष प्राचीन होने के साक्ष्य आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से क्षेत्र के विकास हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी ने प्राप्त किया। जनपद में अनेक स्थल ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के हैं। हाल ही में पुरातत्वविदों एवं इतिहासकारों ने जनपद के महरौनी विकासखंड में स्थित प्रागैतिहासिक जैन तीर्थक्षेत्र नवागढ़ का दौरा किया। विशेषज्ञों ने क्षेत्र में हजारों वर्ष प्राचीन औजारों के अवशेष पहचाने हैं। अतिप्राचीन जैन तीर्थक्षेत्र नवागढ़ गांव को लोग नावई के नाम से जानते हैं। यह थाना सोजना के पास स्थित है। यहां कई जैन मंदिरों व मूर्तियों के अति प्राचीन अवशेष मिले हैं। पिछले दिनों आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समक्ष पहुँचकर क्षेत्र के पदाधिकारियों ने क्षेत्र के विकास हेतु उनका आशीर्वाद भी प्राप्त किया है।

29 जनवरी 2017 को शैल चित्र विशेषज्ञ प्रोफेसर गिरिराज कुमार आगरा एवं अभिलेख विशेषज्ञ डॉ. अभिमन्यु गुप्ता आगरा ने तीर्थक्षेत्र नवागढ़ का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान उन्हें यहाँ स्थित सिद्धों की टोरिया पर दो हजार वर्ष प्राचीन कप मार्क मिला है। फाइटोंन पहाड़ी पर उन्होंने कच्छप शिला में बने शैल चित्रों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया जिसमें उन्होंने पाया कि यह शैल चित्र तीन कालों में बनाये गए हैं। एक शैलाश्रय में उन्होंने कायोत्सर्ग मुद्रा का रॉक इमेज पत्थर पर रेखांकित एवं चरण चिन्ह का निरीक्षण किया, जिसे लगभग दो हजार वर्ष पूर्व यहाँ रहने वाले, मंदिर निर्माण करने वाले कलाकार शिल्पियों ने शिल्प निर्माण करने के उद्देश्य से इसका रेखाचित्र बनाया होगा।

पहाड़ी के पास मिट्टी एवं पाषाण के मनके प्राप्त हुए हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि यहाँ जन जीवन रहा है। इतिहासविद डॉ के.पी. त्रिपाठी ने अपने शोध ग्रन्थ में उल्लेख किया है कि सन् 1182 में पृथ्वीराज चौहान का युद्ध चंदेल शासकों के साथ हुआ था, जिसमें उनको पराजित कर मदनपुर एवं नवागढ़ को ध्वस्त करते हुए दिल्ली लौट गया। इसका उल्लेख मदनपुर स्थित आल्हा-ऊदल बैठक के अभिलेख में भी मिलता है।

फाइटोंन पहाड़ी के आस-पास प्राप्त पाषाणकालीन औजारों से सिद्ध होता है कि यहाँ हजारों वर्ष पूर्व पाषाणकालीन मानवों का निवास रहा होगा। प्रो.गिरिराज कुमार के अनुसार यह क्षेत्र विशाल नगर रहा होगा, जिसमें आठवी-नौवी सदी में जिनालयों का निर्माण किया होगा। क्षेत्र पर संग्रहीत प्रतिहार कालीन शिल्प एवं संवत् 1123 (1066 ईस्वी) के अभिलेख से सिद्ध होता है कि यहाँ विशाल जिनालय रहे होंगे।

गुफा के अंदर प्राप्त कायोत्सर्ग मुद्रा के लेखांकन से सिद्ध होता है कि नवागढ़ दिगंबर साधुओं की साधना स्थली रही है। प्रो. भागचंद भागेन्दु ने अपने लेख संतों की पुरातन साधना स्थली नवागढ़ में विशेष रूप से इस बात का उल्लेख किया है। इतिहास की जानकार डॉ. स्नेहरानी जैन सागर ने अपने आलेख नवागढ़ के बीहड़ में शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक शैलचित्र पुरातत्व के जानकार पं. नीरज जैन सतना ने अपने लेख एक महत्वपूर्ण मध्य युगीन जैन तीर्थ तथा नवागढ़ क्षेत्र का पुरातत्व वैभव में क्षेत्र को हजारों वर्ष प्राचीन बताया है।

प्रो. कुमार ने नवागढ़ में भ्रमण के दौरान बताया कि यह क्षेत्र पुरातत्व की दृष्टि से हजारों वर्ष प्राचीन सिद्ध हो सकता है। यहाँ गहन अन्वेषण की आवश्यकता है। भ्रमण के दौरान क्षेत्र के पदाधिकारीगण उनके साथ रहे।

वही पिछले दिनों नवागढ़ तीर्थक्षेत्र के पदाधिकारियों ब्र. जय निशांत भैया निदेशक, शिखर चंद्र जैन अध्यक्ष, एडवोकेट सनत जैन मंत्री, नरेंद्र जैन कोषाध्यक्ष, राजकुमार (चूना), बबलू, धर्मेश, विजय पाटन आदि ने जैन समाज के सर्वोच्च संत आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समक्ष पहुँचकर उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य श्री ने क्षेत्र के समुचित विकास एवं उन्नायन हेतु अपना मंगल आशीष पदाधिकारियों को प्रदान किया।

प्रतिष्ठाचार्य श्री गुलाबचंद 'पुष्प' जी इस क्षेत्र को लोगों के सामने

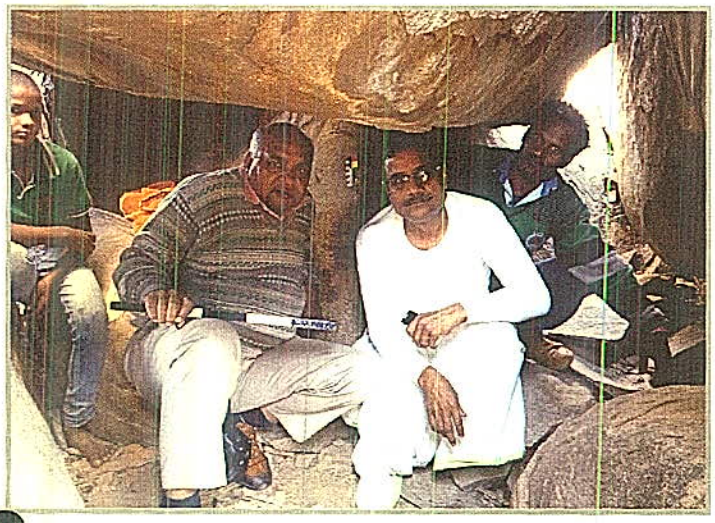

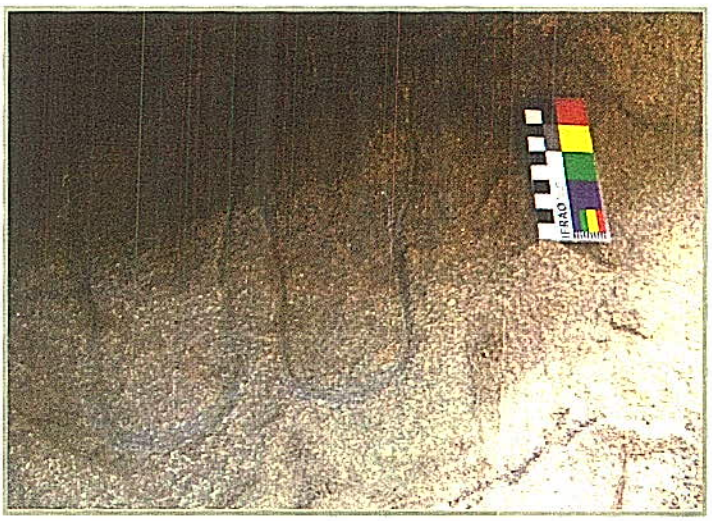

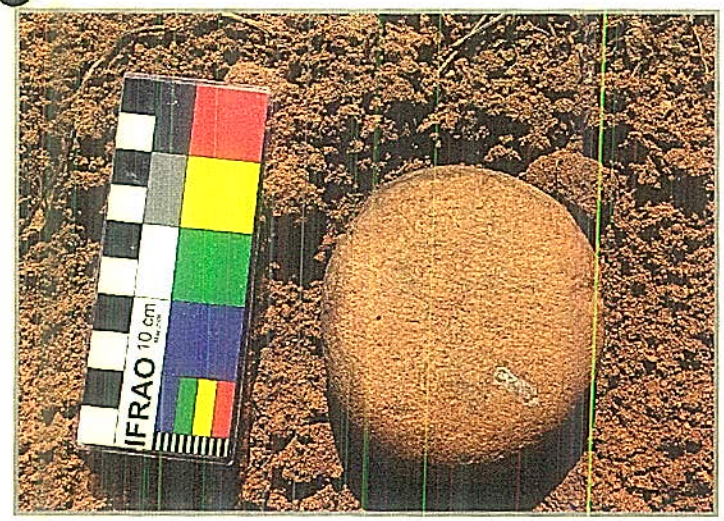

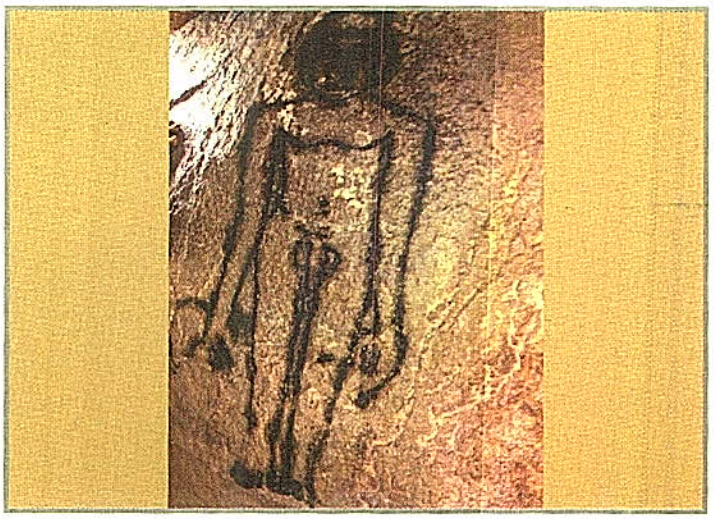

लाये थे। ब्र. जय निशांत भैया के निर्देशन में यह क्षेत्र को नवीन स्वरूप प्रदान करते हुए वास्तु एवं शिल्पकला के अनुरुप किये गए। जन-जन की आस्था के केन्द्र बन चुके इस अति प्राचीन तीर्थ भूमि की बहुमूल्य विरासत को सहेजने के लिए समेकित प्रयास करना होगा। इससे पूर्व भी अनेक इतिहासविद एवं पुरातत्वविद इस क्षेत्र का भ्रमण कर चुके हैं। शताधिक प्रतिमाओं के धड एवं अवशेषों से भी यहाँ विशाल जिनालयों के होने का संकेत मिलता है। पाषाण स्तम्भ, तोरण, छत के शिल्प युक्त विशाल पाषाण विभिन्न प्रकार के प्रतिमाओं के अंगोपांग इस क्षेत्र के गौरवमयी इतिहास के साक्षी हैं।

तप मनुष्यों के लिए चिन्तामणि समान

-मुनि प्रसन्नसागर

पाप रुपी मैल को धोने के लिए तीर्थ है तप

श्रवणबेलगोला। मुनि प्रसन्न सागर ने आचार्य श्री शांतिसागर स्मारक भवन में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि तप मनुष्यों के लिए चिन्तामणि एवं कामधेनु के समान मनवांछित वस्तु का प्रदाता है। आलस्य को छोड़कर विधि के अनुसार बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ तप को जो करता है वह दुनिया में कहीं भी चला जाए वहां सभी को बंधुओं के समान प्रिय एवं विश्वसनीयता को प्राप्त होता है। यह तप अत्यंत भयानक विषय रुपी समुद्र से पार होने के लिए नौका के समान है। संपूर्ण पाप रुपी मैल को धो डालने के लिए तप ही तीर्थ है। नदी का स्नान तट है। अनेक प्रकार के भयों से रक्षा करने वाला, दुर्गति को रोकने वाला, कल्याण का सागर तप है और मुक्ति को महल में चढ़ने के लिए तप सीढ़ियों के समान है। यह तप ललाट के सुंदर तिलक के समान साधू जीवन की शोभा बढ़ाने वाला एवं सम्मान का भूषण है। इसलिए अपनी आत्मिक शक्ति को प्रकट करने तथा मोक्ष सुख को प्राप्त करने के लिए प्रमाद रहित होकर तपधर्म का अनुष्ठान करना चाहिए। मंगलवार को चतुर्दशी के अवसर पर गोम्मेटेश्वर भगवान बाहुबली के चरणों में आचार्य नेमीचंद सिद्धांत चक्रवर्ती रचित गोमटेश स्तुति, सरस्वी स्त्रोत, वज्र पंजर स्त्रोत गणधर वलय स्त्रोत वनगह स्त्रोत का पाठ कर मुनि ने सर्वपापों के प्रायश्चित हेतु पाक्षिक प्रतिक्रमण किया और सिद्ध भक्ति पढ़ी।

प्रस्तुती- पियुष कासलीवाल

अतिशय में अभिवृद्धि करता है हर अमृत महोत्सव

आचार्य 108 श्री योगीन्द्र सागर जी महाराज का 57वां अमृत महोत्सव संपन्न

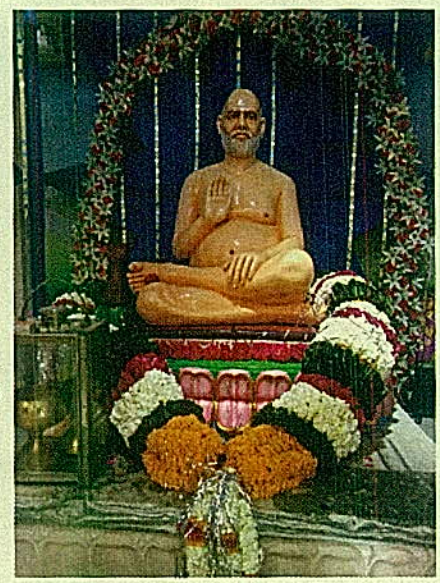

रतलाम । परम पूज्य, प्रातः वंदनीय, प्रज्ञा पुरुषोत्तम, खण्ड विद्या धुरंधर, वात्सल्य शिखर, दिव्य ज्ञान भूषण, प्रबल आगम ज्ञाता आचार्य 108 श्री योगीन्द्र सागर जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित श्री धर्मस्थल शीतल तीर्थ रतलाम में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 17 फरवरी को आचार्य श्री की जन्म जयन्ति को अमृत महोत्सव के रूप में मनाया गया ।

अधिष्ठात्री डॉ सविता जैन के निर्देशन एवम् पू आचार्य 108 श्री सूर्य सागर जी महाराज (अगरकर) के सानिध्य में प्रातः काल से ही आचार्य गुरुदेव के संघस्थ चौत्यालय में श्री चाँदखेड़ी वाले बाबा के भव्य महाभिषेक के साथ अमृत महोत्सव का शुभारम्भ हुआ । तत्पश्चात गुरु भक्तों द्वारा गुरु मंदिर में गुरु बिम्ब पर महाभिषेक व् शांतिधारा का भी पुण्यार्जन किया गया।

दोपहर के सत्र में पूज्य गुरुदेव को विनायंजलि अर्पित करते हुए एक सभा आयोजित की गई जिसमे देशभर के ख्यातनाम विद्वानों सहित कई गुरुभक्तों ने सप्रसंग गुरुदेव को अपनी शाब्दिक विनयांजलि अर्पित की ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय विधायक श्री मथुरालाल जी डामोर एवम् शहर के विशिष्ठ नागरिक, भाजपा के प्रमुख श्री हिम्मत जी कोठारी विद्यमान थे ।

आमन्त्रित विद्वानों में प्रमुख रूप से डॉ अनुपम जैन इंदौर, पं. अजित जी टोंग्या बड़नगर, पं. अर्पित जैन इन्दौर, श्री राजेन्द्र महावीर सनावद, डॉ देवकुमार जी रायपुर (छत्तीसगढ़), श्री मति ज्योति जैन इन्दौर, पं. नितिन जैन भीमपुर, श्री राकेश जैन श्चपलमनश कोटा सहित कई आगन्तुकों ने गुरुदेव के व्यक्तित्व व् कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए गुरुदेव की महिमा का मंडन किया ।

कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री योगींद्र सागर जी महाराज द्वारा रचित श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र केशोरायपाटन विधान पूजन, श्री सिद्धक्षेत्र पावागिर (ऊन) पूजन एवम् सप्त परम स्थान पुस्तिका का भी विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर आचार्य श्री सूर्य सागर जी ने अपने प्रवचनों में कहा की इस दिगम्बर परम्परा में प.पू. आचार्य श्री महावीरकीर्ति व् तत् शिष्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज के पश्चात यदि कोई परोपकारी दिगम्बर संत इस धरा पर हुआ है तो वो केवल मेरे बड़े गुरु भाई आचार्य श्री योगींद्र सागर जी महाराज थे जो साधना तो अपने शरीर को तपा कर करते थे परन्तु उस साधना का प्रतिफल अपनी शरण में आने वाले पीड़ित मानवों को देते थे, वो आज प्रत्यक्ष हमारे बीच नहीं है किन्तु उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरित करता है । यह क्षेत्र (शीतल तीर्थ) कोई सामान्य क्षेत्र नहीं यह उनकी साधना का चर्मोत्कर्ष पड़ाव है जंहा के कण कण में अतिशय व्याप्त हो गया है । यही कारण है की आजभी कोई पीड़ित व्यक्ति इस स्थान से पीड़ा मुक्त होकर ही जाता है ।

कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ सविता [illegible] द्वारा किया गया । सभी आगन्तुकों को यथा योग्य सम्मान से भूषित किया गया ।

तेजी से प्रगतिशील हो रहा है शीतल तीर्थ

आचार्यश्री योगीन्द्रसागरजी महाराज की प्रेरणा से निर्मित दिगम्बर जैन धर्मस्थल शीतलतीर्थ जो रतलाम से बारह किमी दूर बासवाड़ा रोड़ पर स्थापित है ।

नेशनल नॉन वायलेंस युनिटी फाउण्डेशन ट्रस्ट की अधिष्ठात्री डॉ.सविता जैन (उज्जैन) के निर्देशन में तीर्थ निरंतर प्रगति पर है । निर्माणाधीन कैलाश पर्वत पर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवजी की 13 फीट उत्तुंग प्रतिमा स्थापित की गई है । 40 हजार डम्पर मटेरियल से बनाये गए ऊंचे पर्वत पर यह प्रतिमा 2 किमी. दूर से ही श्रद्धालुओं का ध्यान आकृष्ट करती है । पर्वत पर 72 जिनालय निर्मित करने की योजना है । क्षेत्र पर गौशाला में 70 गौवंश पल रहा है । यात्रियों के लिए अतिथि सदन, भोजन श[illegible] त्यागियों के लिए आहार शाला आदी की पूर्ण सुविधा उपलब्ध है । क्षेत्र पर विभिन्न योजनाएं संचालित है व ट्रस्ट को आयकर अधिनियम धारा 80–जी के तहत छूट प्राप्त है ।

– राकेश जैन चपलमन
कोटा (राजस्थान)
मो.नं. 98290–97464

समग्र जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था भारत जैन महामंडल का 55वां राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 12 मार्च 2017 को विड़ला मातुश्री सभागार मुम्बई में सम्पन्न ।

श्रावक शिरोमणि श्री के.सी.जैन (सी.ए.) मुम्बई ने सम्भाला भारत जैन महामंडल का अध्यक्षीय पदभार।

आचार्य ज्ञानसागर जी के सान्निध्य में
अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान 23 अप्रैल को विकास नगर देहरादून में

विकास नगर देहरादून। सराकोद्धारक, राष्ट्रसंत, तपोनिधि संत आचार्यश्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला अखिल भारतीय जैन छात्र–छात्रा प्रतिभा सम्मान रविवार, 23 अप्रैल 2017 को विकास नगर देहरादून (उत्तराखण्ड) में आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मान समारोह 17वां समारोह होगा जिसमें भारतवर्ष के 25 से अधिक राज्यों के एक हजार से अधिक 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त जैन प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय आयोजन में सम्मानित कर उन्हें [illegible]य के कैरियर के प्रति जागरुक कर उनकी काउंसलिंग की जाती है। साथ ही पूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान कर उनमें जैनत्व के संस्कार प्रदान किये जाते है। विगत सोलह वर्षों से निरंतर जारी उक्त आयोजन में जैन समाज के हजारों बच्चों को सम्मानित किया गया है, जो वर्तमान में उच्च पदों पर कार्यरत होकर जैनत्व का गौरव स्थापित कर रहे है।

उक्त प्रतिभा सम्मान पूर्व में दिसम्बर 2016 में ज्ञानतीर्थ मुरैना में आयोजित था। लेकिन अपरिहार्य कारणों से स्थगित हो गया था जो पुनः आयोजित किया जा रहा है।

समारोह के आयोजन सचिव श्री कैलाश गदिया (अजमेर) हैं जो चयनित विद्यार्थियों को पृथक् से पत्र द्वारा सूचित करेंगे।

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज ससंघ सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंच कल्याणक,प्रतिष्ठा महोत्सव 30 अप्रैल से 5 मई 2017 तक विकास नगर देहरादून (उत्तराखण्ड) में आयोजित किया गया है।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'
217, सोलंकी कालोनी, सनावद
मो.नं. 9407492577

Heritage buffs take Ahimsa Walk at Egmoiv museum

Chennai : They have walked to abandoned and neglected Jain sites in various parts of Tamil Nadu 38 times .But the39 th walk ,held in the city on Sunday ,trod a different path .At least 300 heritage enthusiasts went on an Ahimsa Walk through the Government Museum in Chennai to see the rare Jain sculptures housed inside it .The museum maintains a collection of 44 stone and 29 bronze sculptures of Jain Tirthankaras ,Yakshas and Yakshis from the8 th-16th centuries AD.

Although the museum is renowned among scholars for its collection of ancient Jain idols and sculptures ,few members of the public are aware of it ,which made the choice of location especially apt" .Normally ,Ahimsa

Walks are conducted at remote and neglected Jain sites in Tamil Nadu to create awareness about them .But this is the first time such a walk was conducted inside a museum .It was a great experience", said K Ajitha doss, a Jain scholar who led the walk.

The rare Jain idols and sculptures displayed at the museum were brought from various locations of the erstwhile Madras Presidency and many bear inscriptions on them.

"The collection in the government museum is well known throughout the world for the large number of sculptures as well as their heritage value .Many ,including Jains living in Chennai ,are not aware of this treasure .So the walk was an eye-opener for them ",he said.

The walk began at9 amand went on till2 pm .For many ,it was a great learning experience" .We never knew how to identify one Tirthan-kara from the other .The scholar who walked with us told us how one can identify the Tirthankaras based on each one's

P Rajendra Prasad, one of the organisers of the walk, said the museum maintains the artefacts well

style ", said K Murugan ,a regular at the Ahimsa Walks" .I have been to many neglected Jain sites in remote areas .We even clear the bushes and walk .Climbing the rocky hills was always difficult but it was for a cause ,so we always enjoyed it .This walk was different because it opened our eyes to the rich heritage of the Jains ",he said.

P Rajendra Prasad,"We are grateful to the curators and other officials of the museum. They are doing a great job. We had a discussion after the walk and many came forward to preserve the abandoned and neglected Jain sites across the state ", he said.

Once thriving across Tamil Nadu ,the Tamil Jains belonging to the Digambar sect are now facing an identity crisis due to migration, urbanisation and lack of leadership" .Jain villages flourished from Kanyakumari to Kancheepu -ram .But ,today ,there are only132 Jain villages in the state ",said Aj ithadoss .There are more than100 Jain hills in the stat" . Jain idols and sculptures are found abandoned in many areas .We are trying to create awareness among the public about our rich tradition. Today's walk helped us find more like-minded people who want to preserve such sites ",he added.

मंध्याचल कमेटी द्वारा प्रदीप जी जैन, पी एन सी-आगरा का स्वागत

भारत वर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जी जैन पी एन सी का इंदौर आगमन पर तीर्थ क्षेत्र मंध्याचल कमेटी द्वारा अध्यक्ष श्री विमल जी सोगानी के नेतृत्व प्रसिध्द अतिशय क्षेत्र गोम्मट गिरी पर आत्मीय स्वागत किया गया, कार्यक्रम के प्रारंभ में विमल जी सोगानी ने स्वागत भाषण दिया इसके बाद इंदौर की जानी मानी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा प्रदीप जी का स्वागत किया गया प्रमुख रूप से पुलक चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप जी बड़जात्या ,प्रज्ञ श्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेनेश झांझरी, गोम्मट गिरी ट्रस्ट के अध्यक्ष कमल जी सेठी, कार्याध्यक्ष प्रतिपाल जी टोंग्या, कोषाध्यक्ष शांति कुमार जी टोंग्या, दिगंबर जैन महा समिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष सुरेंद्र जैन बाकलीवाल, डी के जैन ,श्री दिगंबर जैन जैसवाल समाज के अध्यक्ष सुनील जी डोटिया महा मंत्री अशोक जैन व् नगर की कई संस्थाओं ने स्वागत किया , इस अवसर पर विमल जी सोगानी ने प्रदीप जी के सामने गोम्मट गिरी पर प्रस्तावित हॉस्पिटल के बारे में जानकारी दी, अपने स्वागत के प्रतिउत्तर में प्रदीप जी ने कहा कि आपके सम्मान से में अभिभूत हु, हर धार्मिक सामाजिक कायी व् रचनात्मक कायी हेतु में व् तीर्थ क्षेत्र कमेटी सदैव तत्पर है, कार्यक्रम का संचालन डॉ संजय जैन ने किया आभार शांति कुमारजी टोंग्या ने माना।

श्री पावागढ़ में वार्षिक ध्वजारोहण कार्यक्रम

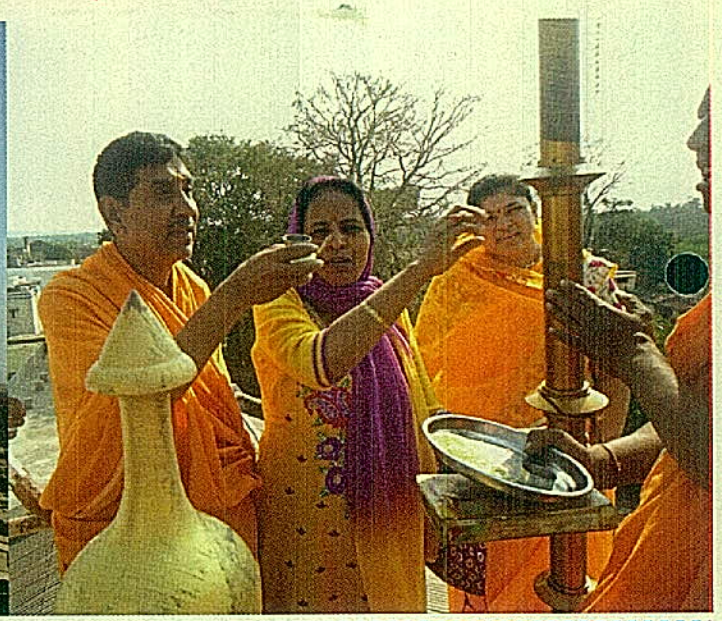

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री देवेन्द्रकुमार जैन
नोएडा (उ.प्र.)

श्री दीपक शिखरचंद पेढारी
परतवाडा, अमरावती (महा.)

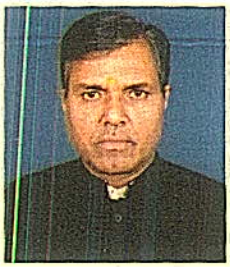

श्री जम्बूकुमार हीरालाल जैन
लखनऊ (उ.प्र.)

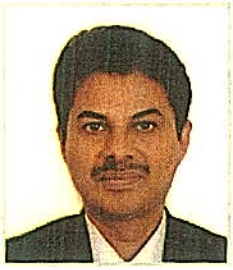

श्री अंशु धर्मवीर जैन
लखनऊ (उ.प्र.)

श्री रोशनलाल जयभगवान जैन
नई दिल्ली

श्री सोहनलाल ताराचंद जैन(पहाडिया)
पोन्डीचेरी (तमिलनाडू)

श्री नरेशकुमार फुलचंद जैन
पोन्डीचेरी (तमिलनाडू)

श्रीमती संगीता नरेशकुमार जैन
पोन्डीचेरी (तमिलनाडू)

श्री अनिलकुमार धर्मवीर जैन
मुम्बई

श्री अलोक संतोषकुमार जैन (सबलावत)
जयपुर (राज.)

श्री हर्षवर्धन सुभाष बुबने
सोलापुर (महा.)

श्री श्रीकान्त रतनलाल कोरडे
सोलापुर (महा.)

श्री प्रदीप संसारचंद्र जैन (लुहाडिया)
जयपुर (राज.)

श्रीमती त्रिशला राजेन्द्रकुमार गोधा
जयपुर (राज.)

श्रीमती प्रियंका शैलेन्द्र गोधा
जयपुर (राज.)

श्री निशांत राजेन्द्रकुमार गोधा
जयपुर (राज.)

श्री धीरेन्द्र रमेशचंद गोधा
जयपुर (राज.)

श्री शैलेन्द्र राजेन्द्रकुमार गोधा
जयपुर (राज.)

श्री सुनील भागचंद बक्षी
जयपुर (राज.)

श्री अनंत सुनील बक्षी
जयपुर (राज.)

श्री प्रशान्त वालचंद शाह
मुम्बई

श्री बी. अश्विनीमरण जैन
पीदारीपट्टू (विल्लूपुरम,तमिलनाडू)

आर. अलवंधर जैन
पीदारीपट्टू (विल्लूपुरम, तमिलनाडू)

बी. वेतरी पुगझ जैन
पीदारीपट्टू (विल्लूपुरम, तमिलनाडू)

श्रीमती सुवर्णा सुभाष जमालपुरे
पुणे (महा.)